ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 24 दिसम्बर 2017

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 24 दिसम्बर 2017 से 30 दिसम्बर 2017

पौष शु.– 06 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 58, अंक 102, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

हंसराज मॉडल स्कूल, पंजाबी बाग का स्वर्णजयन्ती समारोह सम्पन्न

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के पब्लिक स्कूल शिक्षा प्रणाली के सबसे पहले स्कूल, हंसराज मॉडल स्कूल ने राष्ट्र निर्माण के पथ पर समर्पित गौरवशाली पचास वर्ष पूरे होने पर स्वर्णजयन्ती समारोह बड़ी ही धूम–धाम से मनाया। 30 अप्रैल 2016 को 51 कुण्डीय यज्ञ महोत्सव के साथ आरम्भ हुई वर्षभर चलने वाले समारोहों की श्रृंखला का भव्य समापन समारोह 2 दिसम्बर 2017 को सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी पद्मश्री समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री पूनम सूरी जी ने अपने उद्बोधन में भव्य एवं विशाल आयोजन के लिए हंसराज मॉडल स्कूल की पूरी टीम को बधाई देते हुए डी.ए.वी. की 919 मनकों की माला में हंसराज मॉडल स्कूल को सर्वश्रेष्ठ हीरा बताया। जीवन की सफलता के लिए उन्होंने लोगों को त्रिशूल देते हुए सदा मुस्कुराते रहने, सकारात्मक सोचने और हमेशा बड़ा सोचने का मन्त्र दिया।

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के उपप्रधान और हंसराज मॉडल स्कूल के चेयरमैन श्री टी आर. गुप्ता जी ने इस ऐतिहासिक समारोह की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री गुप्ता जी ने विद्यालय के संस्थापक प्रधानाचार्य के रूप में अपने अमूल्य अनुभव साझा किए।

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के महासचिव श्री आर.एस.शर्मा जी एवं डी. ए.वी. पब्लिक स्कूलों की निदेशिका डॉ निशा पेशिन समारोह के विशिष्ट सम्मानित अतिथि थे।

समापन समारोह का शुभारम्भ आर्य समाज की परम्परा के अनुरूप हवन के साथ हुआ। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री एस.के. शर्मा जी के संरक्षण में दयानंद ब्राहृम महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ प्रमोद योगार्थी के ब्रह्मत्व में आर्य युवा समाज के विद्यार्थियों ने यज्ञ सम्पन्न कराया। डी.ए.वी. के गणमान्य पदाधिकारियों के साथ प्रधानाचार्या श्रीमती हीमाल हंडू भट एवं विशिष्ट अतिथियों ने यज्ञ में श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ प्रदान कीं।

इसके बाद दीप प्रज्ज्वलन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरु हुआ, जिसमें विद्यालय के चौथी से बारहवीं कक्षाओं के 300 विद्यार्थियों ने 'स्वर लहरी' ऑर्केस्ट्रा प्रस्तुत किया और पहली दूसरी एवं तीसरी कक्षाओं के 300 विद्यार्थियों ने अतिथियों एवं दर्शकों के स्वागत में 'ट्विंकल टोज' स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। दोनों ही प्रस्तुतियों ने दर्शकों के मन मोह लिए।

सत्र 2016–17 के अर्न्तगत विद्यालय की खेल संबन्धी अभूतपूर्व अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय उपलब्धियों का उल्लेख करती हुई 'स्पोर्टसज़ीन' पत्रिका का विमोचन हुआ और लगभग 300 मेधावी एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

पाँचवीं और छठी कक्षाओं के विद्यार्थियों ने छत्तीसगढ़ी, संबलपुरी और कडागम लोकनृत्यों की अद्भुत त्रिवेणी 'आनन्दोत्सव' प्रस्तुत किया, जिसे देखकर दर्शक आनन्दविभोर हो उठे।

संसार के सबसे पवित्र कर्म शिक्षा के लिए समर्पित हंसराज मॉडल स्कूल के गौरवशाली 50 वर्षों की गौरव–गाथा प्रस्तुत करते हुए पाँचवीं कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के 800 विद्यार्थियों ने 'नींव से शिखर तक' भव्य नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। लगभग 2000 विद्यार्थियों ने समारोह में भाग लिया। इस अविस्मरणीय अवसर पर डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के पदाधिकारीगण, अधिकारीगण एवं दिल्ली के अनेक स्कूलों के प्रधानाचार्यों के साथ लगभग 9000 दर्शक उपस्थित थे।

प्रधानाचार्या श्रीमती हीमाल हंडू भट ने इस ऐतिहासिक अवसर पर विद्यालय की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए यह संकल्प लिया कि संस्था की समृद्ध विरासत को सशक्त रखते हुए हम 'हीरक जयंती' से भी आगे लेकर जाएँगे। राष्ट्रगान के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 24 दिसम्बर 2017 से 30 दिसम्बर 2017

बड़े-छोटे सबको नमः

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नवाम, मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः।।

ऋग् 1.27.13

ऋषिः **आजीगर्तिः शुनः शेषः**। देवता **विश्वेदेवाः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(महद् भ्यः नमः)** [ज्ञान और गुणों में] महानों को नमः **(अर्भकेभ्यः नमः)** छोटों को नमः, **(युवभ्यः नमः)** युवकों को नमः, **(आशिनेभ्यः नमः)** वयोवृद्धों को नमः। **(यदि शक्नवाम)** जहाँ तक [हम] समर्थ हों **(देवान्)** विद्वानों को **(यजाम)** सत्कृत करें। **(देवाः)** हे विद्वानों! **(ज्यायसः)** अपने से बड़े के **(शंसं)** स्तवन को [मैं] **(मा आवृक्षि)** न छोड़ूँ।

● मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे अन्यों के प्रति अभिवादन आदि उचित शिष्टाचार का पालन करना होता है। मैं भी बड़े छोटे सबको अभिवादन करता हूँ; कृत्रिम और दिखावटी नहीं, किन्तु अन्तर्मन से 'नमः' करता हूँ। 'नमः' का मूल अर्थ है झुकना। झुकना सिर से भी होता है, मन से भी। राजा, राज्याधिकारी, माता, पिता, गुरु, अतिथि, साधु, संन्यासी, शिशु, कुमार, विद्यार्थी, युवक, वृद्ध, स्वामी, सेवक प्रत्येक से मिलने पर हृदय में जो आदर, श्रद्धा, प्रेम, आशीर्वाद आदि के भाव उत्पन्न होते हैं, वे सब 'नमः' के अन्दर समाविष्ट हैं। अतः अभिवादन के लिए वैदिक 'नमस्ते' शब्द अत्यन्त हृदय-ग्राही और उपयुक्त है। जब छोटे बड़े को 'नमस्ते' कहने में पारस्परिक सौहार्द और एक-दूसरे की उन्नति की कामना व्यक्त होती है। साथ ही 'नमः' में केवल शुभकामना ही नहीं, प्रत्युत बड़े-छोटे सबके प्रति कर्तव्य-पालन का भाव भी निहित है।

हे राष्ट्र के विद्यावृद्ध और गुणवृद्ध महान् नर-नारियों! हे उपदेशामृत-वर्षा से जनता को तृप्त करनेवाले वीतराग संन्यासियो! हे विद्वच्छिरोमणि तपोनिष्ठ वानप्रस्थ आचार्यो! हे देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने को उद्यत महावीरों! हे जनता-जनार्दन की सेवा में तत्पर महापुरूषो! 'तुम्हें नमः'। हे निश्छल भावभंगियों और बाल-क्रीड़ाओं से मन को मुदित करने वाले अबोध शिशुओ! हे अल्पवयस्क कुमारो! हे गुरु के अधीन विद्याध्ययन में रत तपस्वी, व्रती ब्रह्मचारियो! तुम्हें 'नमः'। हे अपने संकल्प-बल से भूमि आकाश को झुका देनेवाले बली, साहसी, ओजस्वी, विजयी युवको! तुम्हें 'नमः'। हे परिपक्व, धीर, गम्भीर, अनुभवी, धन्य, वन्दनीय, वयोवृद्ध जनो! तुम्हें 'नमः'।

समस्त बालक, युवक, वृद्ध मेरे अर्चनीय देव हैं। जहाँ तक सम्भव होगा, मैं इन्हें स्नेह-सत्कार दूँगा, इनकी सेवा करूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा कि जो मुझसे बड़े हैं, उनकी शंसना में, उनके उपकार के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन में मुझसे कोई त्रुटि न हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

स्वामी जी ने "क्रोध पर प्रेम विजय" पर कथा सुनाते हुए बताया क्रोध बहुत बुरी बला है। सवा करोड़ नहीं, सवा अरब गायत्री का जाप कर लें, एक बार का क्रोध इसके सारे फल को नष्ट कर देता है।

दूसरी कथा में स्वामी जी ने "क्रोध महा-चाण्डाल" पर कथा सुनाते हुए बताया क्रोध महा-चाण्डाल है। सब-कुछ बिगाड़ देता है। जहाँ उत्पन्न हो जाए, वहाँ सर्वनाश कर देता है।

"उचित क्रोध" पर कथा सुनाते हुए कहा कि जो घर से बाहर और देश की रक्षा के लिए, उसकी स्वतंत्रता के लिए और धर्म की रक्षा के लिए किया जाए, वह उचित क्रोध है। ऐसा क्रोध आत्मदर्शन के मार्ग में रूकावट नहीं। आत्मदर्शन के मार्ग में रूकावट है वह क्रोध, जो घर में किया जाए, स्वार्थ के लिए किया जाए। ऐसा क्रोध बुद्धि को नष्ट कर देता है। बुद्धि का नाश होने से सर्वनाश होता है।

-आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

सहनशक्ति की महिमा

महात्मा सुकरात बहुत बड़े विद्वान् और दार्शनिक थे। सारा यूनान उनका आदर करता था। परन्तु उनकी धर्मपत्नी थी क्रोध की साक्षात् मूर्ति। हर समय लड़ती थी वह। मीठा बोलना उसने सीखा नहीं था। प्रतीत होता था- चीनी उसने कम खाई; सदा कुनेन ही खाती रही। सुकरात घर पर मौन बैठते तो वह चिल्लाना आरम्भ कर देती- "हर समय चुप ही बैठे रहते हैं।" वे कोई पुस्तक पढ़ते तो चिल्ला उठती- "आग लगे इन पुस्तकों को! इन्हीं के साथ विवाह कर लेना था, मेरे साथ क्यों किया?"

एक दिन वे आए तो पत्नी ने इसी प्रकार बकना-झकना आरम्भ किया। सुकरात के कुछ विद्यार्थी और भक्त भी उनके साथ थे। उन्होंने इस बात का बहुत बुरा माना, परन्तु सुकरात मौन बैठे रहे। पत्नी ने इन्हें मौन देखा तो उसके क्रोध का पारा चढ़ गया। वह और भी ऊँची आवाज़ में बोलने लगी। सुकरात फिर भी चुपचाप बैठे रहे। पत्नी ने तब क्रोध से पागल होकर मकान के बाहर पड़ा हुआ गन्दा कीचड़ एक बर्तन में भरा, शीघ्रता से आकर सारा कीचड़ सुकरात के सिर पर डाल दिया।

तब सुकरात हँसकर बोले- "देवी, आज तो पुरानी कहावत असत्य सिद्ध हो गई। कहावत है कि गरजने वाले बरसते नहीं। आज देखा कि जो गरजते हैं वे बरसते भी हैं!"

सुकरात हँसते रहे, परन्तु उनका एक विद्यार्थी क्रोध में आ गया। उस विद्यार्थी ने चिल्लाकर कहा- "यह स्त्री तो चुड़ैल है! आपके योग्य नहीं!"

सुकरात बोले- "नहीं, यार मेरे ही योग्य है। यह ठोकर लगा-लगाकर देखती रहती है कि सुकरात कच्चा है या पक्का। इसके बार-बार ठोकर लगाने से मुझे पता तो लगता रहता है कि मेरे अन्दर सहनशक्ति है या नहीं।'

पत्नी ने ये शब्द सुने तो झट उनके चरणों में गिर पड़ी। रोती हुई बोली- "आप तो देवता हैं! मैंने आपको पहचाना नहीं!"

यह है तप की महिमा! तप और सहनशीलता से अन्ततोगत्वा मनुष्य को विजय प्राप्त होती है। बुरे व्यक्ति भी अपन स्वभाव बदल देते हैं।

सहनशीलता का जादू

महर्षि दयानन्द ठहरे थे फर्रुखाबाद में गंगा के तट पर। उनसे थोड़ी ही दूर एक और झोंपड़ी में एक दूसरा साधु भी ठहरा हुआ था। प्रतिदिन वह देव दयानन्द की कुटिया के पास आकर उन्हें गालियाँ देता रहता। देव दयानन्द सुनते और मुस्करा देते। कोई भी उत्तर नहीं देते थे। कई बार उनके भक्तों ने कहा- "महाराज! आपकी आज्ञा हो तो इस दुष्ट को सीधा कर दें?"

महाराज सदा कहते -"नहीं, वह स्वयं ही सीधा हो जाएगा।"

एक दिन किसी सज्जन ने फलों का एक बहुत बड़ा टोकरा महर्षि के पास भेजा। महर्षि ने टोकरे से बहुत अच्छे-अच्छे फल निकाले, उन्हें एक कपड़े में बाँधा और एक व्यक्ति से बोले- "ये फल उस साधु को दे आओ, जो उस परली कुटी में रहता है, जो प्रतिदिन यहाँ आकर कृपा करता है।"

उस व्यक्ति ने कहा- "परन्तु वह तो आपको गालियाँ देता है?"

महर्षि बोले- "हाँ, उसी को दे आओ।"

वह सज्जन फल लेकर उस साधु के पास गए। जाकर बोले- "साधु बाबा! ये

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

अन्तःकरण व प्राण–अपान का रक्षक प्रभु

● महात्मा चैतन्यस्वामी

प्राणपा मे अपानपाः, चक्षुषाः श्रोत्रपाश्च। वाचो मे विश्वभेषजो, मनसोऽसि विलायकः।। (यजु. 20–34) हे परमेश्वर! तू प्राण का रक्ष अपान का रक्षक, चक्षु का रक्षक और श्रोत्र का रक्षक है, मेरी वाणी के सब रोगों की चिकित्सा करने वाला तथा मन को इन्द्रियों के साथ जोड़ने वाला और आत्मा में लीन कराने वाला तू ही है। जिस प्रकार परमात्मा सारे ब्रह्माण्ड का पालन करने वाले हैं, वैसे ही हमारी इस छोटी सी नगरी के भी सजाने–सँवारने और पालन करने वाले प्रभु ही हैं। परमात्मा ने हमें इतना कुछ दिया है कि और कुछ भी माँगने की आवश्यकता ही नहीं है–**विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः। सवितारं नृचक्षसम्।।** (यजु. 30–4) प्रभु ने हमें कर्मानुसार विभाजित करके बहुत से अद्भुत् साधन दे रखे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम इनका सदुपयोग करें। प्रभु ने हमें वाणी, हाथ, पैर, उपस्थ और गुदा में पाँच कर्मेन्द्रियाँ दी हैं। इनसे भी अधिक महत्वपूर्ण श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, रसना और त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ दी हैं और वह प्रभु ही इन सबका रक्षक भी है। प्रभु को प्राण व अपान का रक्षक बताया गया है। इन इन्द्रियों आदि का संचालन प्राण के द्वारा ही होता है इसलिए कहा गया है कि प्रभु आप मेरे प्राण और अपान के रक्षक हैं। मुख्य पाँच प्राणों द्वारा जो संचालन किया जा रहा है वह इस प्रकार है कि प्राण–आँख, कान, मुख, नासिका आदि उर्ध्व अंगों का संचालन करता है। अपान, गुदा, उपस्थ तथा मल त्यागादि की समस्त क्रिया का संचालन करता है। समान–पेट, नाभि, जठराग्नि...भोजनादि के पाचन क्रिया का संचालन करता है। व्यान–हृदय से प्रसूत समस्त नाड़ियों से परिक्रमा कराता हुआ रक्त–शुद्धि का कार्य करता है और उदान 101 नाड़ियों में से एक द्वारा ऊपर जाने वाले प्राण का नाम उदान है, सूक्ष्म शरीर सहित जीव को भिन्न–भिन्न स्थानों में पहुँचाता है। ब्रह्माण्ड में सूर्य प्राण है। पृथिवी अपान, आकाश समान, वायु–व्यान और अग्नि–उदान है।

प्रभु ने हमें पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ दीं जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण है मगर इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण अन्तःकरण भी दिया है। यह मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार है। जिस प्रकार प्रभु प्राण–अपान एवं कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों का रक्षक है उसी प्रकार अन्तकरण का भी प्रभु ही रक्षक है। वही (**मनसः वलायकः असि**) इस मन को इन्द्रियों के साथ जोड़ने वाला और आत्मा में लीन कराने वाला है...यजुर्वेद के 34वें अध्याय के छः मन्त्रों में इस मन की विलक्षणता और अद्भुत शक्ति का विस्तार से विवेचन किया गया है वहाँ इसे **यज्जाग्रतो**.... जागते हुए ही नहीं बल्कि सोते हुए भी दूर–दूर तक जाने वाला बताया गया है। उसे **हृत्प्रतिष्ठिम्** हृदय में प्रतिष्ठित बताया है। उसे **सुसारथि**–उत्तम सारथी कहा है। उसे **देवम्** अर्थात् दिव्यता से परिपूर्ण तथा 'देव' अर्थात् आत्मा का प्रमुख साधन बताया है। यहाँ इस बात को इस प्रकार से समझाना चाहिए कि जैसे आँख रूप का उपकरण है वैसे ही मन आत्मदर्शन का उपकरण है। मन को **प्रज्ञानम्**–प्रकृष्ट ज्ञान प्राप्त कराने वाला बताया है। मन के बिना प्रकृष्ट–ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता है क्योंकि आँख देख सकती है, कान सुन सकते हैं मगर आत्मदर्शन केवल मन ही करवा सकता है। आगे इस मन को **चेतः**–अर्थात् आत्म–चेतना का साधक बताया है। यह मन ही **धृतिश्च**–धैर्य का साधन है... कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत......, इस मन को **अमृतं ज्योतिः**–अमरत्व की ज्योति देने का साधन भी बताया है। मन के उपरोक्त गुणों पर चिंतन और मनन करके हमें मन की इन समस्त शक्तियों का प्रयोग करके अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। हम मन की इन शक्तियों को पहचान लें तो कोई कारण नहीं कि हम जीवन में स्वयं को निराश, हताश और असहाय अनुभव करें। वास्तव में व्यक्ति अपने भीतर छिपी इन शक्तियों को पहचान हीं नहीं पाता है इसीलिए वह स्वयं को प्रभु का उपासक नहीं बना पाता है और न ही स्वयं को सुरक्षित समझता है... मन को साधने के लिए मन के उपरोक्त गुणों व शक्तियों को पहचानकर उसे सयंमित करना अपेक्षित है। वायु निरंतर वेग से चलता रहता है मगर पृथिवी के परिधि–मण्डल पर आकर रूक जाता है, जल प्रवाह निरंतर बहता है मगर समतल भूमि पर रुक जाता है, वैसे ही मन भी असीम परमात्मदेव के चिंतन में जाकर रुक जाता है ... जो लोग यह कहते हैं कि मन कहीं भी रुकता नहीं है वह उनकी अपनी ही कमजोरी है मन तो रुकता है मगर उसे रोकने अर्थात् दिशा देने की तकनीक आनी चाहिए। गीता तथा योगदर्शन में कहा गया कि मन को अभ्यास और वैराग्य के द्वारा वश में किया जा सकता है।

उपरोक्त वेद मंत्र में यह भी कहा गया है कि वह परमात्मा ही मन को इन्द्रियों के साथ जोड़ने वाला तथा आत्मा में लीन करने वाला है। वेद में अनयंत्र भी कहा गया है–**इदं सवितर्वि जानीहि षड्यमा एक एकजः। तस्मिन्हापित्वमिच्छन्ते य एषामेक एकजः।।** (अथर्व.10–8–5) हे जीव! तू यह समझ ले कि पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और एक मन ये छः परस्पर जोड़े के रूप में रहने वाले हैं। अकेली आँख नहीं देखती.... मन से मिलकर ही देखने वाली बनती है, कान नहीं सुनता है बल्कि मन से मिलकर वह सुनता है। मगर मन भी उस एक आत्मा के संपर्क में ही कार्य कर पाता है। आत्मा का निवास जब तक है तभी तक इनका कार्यकलाप चलता है, आत्मा के निकल जाने पर इनका संगतिकरण भी बिखर जाता है... साधना प्रभु के सुरक्षा कवच में सुरक्षित हुआ जा सकता है और उसके लिए अपनी बुद्धि को भी निर्णयात्मक बनाने की अपेक्षा है। गीता में कहा गया है (**संशयात्मा विनश्यति** गीता 4–40 संशयग्रस्त बुद्धि वाले का विनाश हो जाता है। विधि और निषेध के रहस्य को पहचानकर उसका अनुपालन करना चाहिए। सत्य बोलो यह विधि है निषेध स्वयं हो गया कि असत्य नहीं बोलना। इसी प्रकार वहाँ जाओ का मतलब यह भी हो गया कि और कहीं मत जाओ। ज्ञान क्रिया से जुड़ा होना चाहिए...जो ज्ञान हमारे कर्म में नहीं आता वह ज्ञान किस काम का? बहुत से व्यक्ति हैं जो जीवनभर मात्र बड़ी–बड़ी योजनाएँ ही बनाते रहते हैं मगर उन्हें कार्यान्वित करने की दिशा में कोई प्रयास नहीं करते हैं। इसी प्रकार कुछ लोग मात्र ज्ञान–ग्रहण करने में ही लगे रहते हैं उसे अपने जीवन में धारण नहीं करते हैं। वेद कहता है–**संश्रुतेन गमेमही...** हम सुने हुए उपदेश के अनुसार जीवन बनाएँ... ज्ञान स्वाभाविक और नैमित्तक दो प्रकार का होता है। आगे नैमित्तक के भी अभावात्मक, संशयात्मक, भ्रमात्मक और निश्चयात्मक ये चार भेद हैं। यह निश्चयात्मक ज्ञान ही बुद्धि की निर्णयात्मक स्थिति है...गीता के अनुसार अव्यसायात्मक बुद्धि अनेक विषयों में वा अनेक शाखाओं में बँटी होती है, और व्यवसायात्मक बुद्धि का भाव है कि जो किसी भी संकल्प को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील हो जाती है.... इसे ही हम एकाग्रबुद्धि कह सकते हैं। गीता में आगे चलकर इसी को बुद्धि–योग कहा है तथा ऐसा व्यक्ति ही अपने कार्यों को कुशलतापूर्वक कर सकने में समर्थ होता है। इतना ही नहीं बल्कि ऐसा व्यक्ति ही निष्कामकर्मी भी बनता है।

ऐसा योगी ही जन्म–मरण के बन्धन से मुक्त होता है और वही 'स्थितप्रज्ञ' बनता है। गीता में अर्जुन के पूछने पर कि ऐसे व्यक्ति का बोलना, बैठना, चलना आदि कैसा होता है, श्री कृष्णजी कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति राग–भय–क्रोध से मुक्त होता है। वह मैं की भावना का त्यागी होता है। वह प्रज्ञावान होता है और जैसे कछुआ अपने अंगों को अपने ही भीतर समेट लेता है वैसे ही स्थिप्रज्ञ भी अपनी इन्द्रियों को समेट लेता है। वह पूर्णरूप से इन्द्रिय–संयमी हो जाता है...मोह नाम की वस्तु उसे छू तक भी नहीं पाती है इसलिए वह ब्राम्ही–स्थिति का अधिकारी बनता है। वह अपनी समस्त कामनाओं का त्याग कर देता है। इसीलिए वह सुख–दुःख, हानि–लाभ तथा यश–अपयश में सम रहता है। बुद्धि की इस उत्कृष्टता को प्राप्त करना चाहिए। बुद्धि की श्रेष्ठता के सम्बंध में गीता में कहा गया है कि (3–42) हे अर्जुन! इन्द्रियाँ श्रेष्ठ हैं मगर इन्द्रियों की अपेक्षा मन श्रेष्ठ है और मन की अपेक्षा बुद्धि श्रेष्ठ है, बुद्धि की अपेक्षा वह 'आत्मा' अधिक श्रेष्ठ है। बुद्धि का वर्गीकरण करते हुए गीता में (गी.18–30 से 32) बहुत अच्छा चिंतन दिया है। वहाँ पर तीन प्रकार की बुद्धि बताई गई है–तामसिक, राजसिक और सात्विक बुद्धि। तामसिक–बुद्धि वाला व्यक्ति अन्धकार के आवरण से घिरा हुआ होता है इसलिए वह धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म समझने लगता है। उसकी बुद्धि सबकुछ उल्टा ही देखने लगती है। राजसिक–बुद्धि वाला मनुष्य धर्म–अधर्म तथा कार्य व अकार्य के अस्तित्व को मानता तो है मगर वह उन्हें ठीक–ठीक नहीं समझ पाता है। इन दोनों के विपरीत सात्विक–बुद्धि वाला व्यक्ति धर्म व अधर्म भेद करने की सामर्थ्य रखता है। उसे कार्य–अकार्य की भी पहचान होती है। वह यह भी जानता है कि किससे डरना चाहिए और किससे नहीं, कौन वस्तुएँ आत्मा को बाँधती है और कौन छुड़ाती है उसे इस बात का भी ज्ञान होता है.... इसलिए बुद्धि को तीर्थ कहा गया है।

जहाँ तक चित्त की बात है तो यह चित्त ही है जो भूत एवं भविष्य का स्मरण रखता है। पाँच ज्ञानेन्द्रियों के विषयों अर्थात् गन्ध, रस, रूप, स्पर्श व शब्द का ज्ञान इसी से होता है। मन का संकल्प–विकल्प व्यवहार और बुद्धि का सन्देह व निर्णय जैसे भूतकाल में अनुभव किए, वर्तमान में किए जा रहे हैं और भविष्य में किए जाने वाले हैं या जिन पर लक्ष्य व ध्यान है–ये सब चित्त के ही अधीन हैं। वेद में कहा गया है–**येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।** अर्थात् इस चित्त के द्वारा ही सप्तहोताओं अर्थात् दो कानों, दो आंखों, दो नासिका छिद्रों और मुख का कार्य चलता है। जो व्यक्ति अयुक्त कर्मों का बुरा फल तथा पुण्य कर्मों का श्रेष्ठ फल भूल जाता है (भूतकाल) उसका वर्तमान कभी नहीं बना करता है। जो अपने भूतकाल की गलतियों से किसी प्रकार का सबक नहीं लेता है और अपने भविष्य की नहीं सोचता उसका वर्तमान भी नहीं बनता है। पिछले निकृष्ट कर्मों का त्याग और पुण्यकर्मों का अचारण करके अपने वर्तमान को बनाने वाला ही सुखी है। मगर उपयोग तो अपने वर्तमान का ही करना है क्योंकि भूत चला गया और भविष्य अभी आने वाला है, उन्हें पकड़ना कठिन है मगर

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

सफलता का मार्ग

● प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

**यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवायन्तु सुमनस्यमानाः।।**

अथर्व. 2-35-5

शब्दार्थ :-यज्ञस्य = यज्ञ का, जीवन का, **चक्षुः** = दर्शन शक्ति, **मुखम्** = मुख, खाने का साधन, **प्रभृतिः** = भरण-पोषण करने वाला, वाचा श्रोत्रेण मनसा = वाणी, कान, मन के द्वारा, **जुहोमि** = आहुति देता हूँ, **इमं यज्ञम्** = इस जीवन यज्ञ को, **विततम्** = विस्तृत किया है, **विश्वकर्मणा** = विश्वकर्ता ने, **देवाः** = दिव्य भावना वाले, **आयन्तु** = आवें, शामिल हों, **सुमनस्यमानाः** = सुमनस्कतापूर्वक

भावार्थ: जीवन यज्ञ का भरण पोषण चक्षु और मुख से होता है। मैं वाणी, कान और मन से आहुति देता हूँ। इस जीवन यज्ञ का विस्तार विश्वकर्मा प्रभु ने किया है। इस जीवन यज्ञ में प्रसन्नता पूर्वक सम्मिलित होने के लिए हम दिव्य भाव से सम्पन्न पुरुषों को आमंत्रित करते हैं।

विचार बिन्दु:

1. 'जीवन यज्ञमय है' का भाव।
2. जीवन यज्ञ का विस्तार विश्वकर्मा का प्रसाद है।
3. हमारे अन्तः-करण और बाह्यकरण इस यज्ञ में निस्वार्थ आहुति दें।
4. दिव्यभावना वाले देवों का आशीर्वाद मिले।

व्याख्या

प्रस्तुत मंत्र में हमारे जीवन को यज्ञ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हमारा जीवन यज्ञमय है। वेद में कहा गया है- 'क्रतुमयोऽयं पुरुषः' यह पुरुष यज्ञमय है। यज्ञ में अग्नि जलाते हैं और उसमें हवनीय द्रव्यों की आहुति देते हैं। यज्ञ के तीन अंग हैं देव पूजा, संगतिकरण और दान। हमारे जीवन में देव पूजा, संगतिकरण और दान का बड़ा महत्त्व है। ये ही यज्ञ के अंग हैं। हमारे जीवन रूपी यज्ञ का भरण-पोषण वाणी और मुख से होता है। हमारे जीवन यज्ञ का विस्तार प्रभु विश्वकर्मा ने किया है।

हमारा जीवन विश्वकर्मा का प्रसाद है। प्रसाद के साथ कुछ भावनाएँ जुड़ी हैं। प्रसाद के साथ हमारा ममत्व नहीं होना चाहिए। प्रसाद तो भगवान का है। भगवान ने प्रसन्न होकर हमें प्रसाद दिया है। प्रसाद का तो अर्थ ही है-प्रसन्नता-'प्रसादस्तु प्रसन्नता'। प्रसाद के साथ एक भावना बाँट कर खाने की भी है। हमारा जीवन केवल हमारे लिए नहीं है, यह सारे संसार के लिए है। हम अपनी योग्यता, क्रियाशीलता को सारे संसार के लिए प्रभु का प्रसाद समझें। हम आँख और मुख से जीवन का भरण-पोषण करते हैं। आँखें ज्ञान-इन्द्रियों का प्रतीक हैं तो मुख कर्म-इन्द्रियों का प्रतीक है। इन्हीं ज्ञान और कर्म इन्द्रियों से अपने इस जीवन रूपी यज्ञ में निःस्वार्थ होकर आहुति दें। ज्ञान-इन्द्रियों से ज्ञान का अर्जन करके हम कर्म इन्द्रियों से कर्म करते हैं।

हमारे कार्य करने के दो तरह के उपकरण हैं। जिन्हें हम बाह्यकरण या बहिष्करण और अन्तःकरण कहते हैं। हमारे बहिष्करणों में हमारी कर्म-इन्द्रियाँ हैं और ज्ञान-इन्द्रियाँ भी हैं। हमारे अन्तःकरण में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ये चार तत्त्व हैं। इन सारे उपकरणों से हम इस जीवन यज्ञ को सफल बनाते हैं। इन्हीं उपकरणों से जीवन यज्ञ में आहुति दी जाती है।

यज्ञ में हवि की आहुति दी जाती है। मंत्र में कहा है कि हम वाणी, कान और मन से इस यज्ञ में आहुति देते हैं। हमारे यज्ञों में सुमनस्कता अर्थात् सुमनता की हवि होनी चाहिए। सुमन का अर्थ है पुष्प। सुमन कोमल होता है, सुगंधित होता है, और मधुमय होता है। हमारी वाणी में कोमलता हो, कठोरता और कटुता न हो। हमारी वाणी में मधुरिमा हो और हमारी वाणी से संसार में सुन्दरता का विस्तार हो।

हमारे कान मधुर सुनें और कटु सुनने का अभ्यास हममें न हो। कटु, कुत्सित, चापलूसी, झूठ आदि सुनने से हमारे कान बचें। हमारे कानों में भी सुमनता हो। मंत्र में मन को भी आहुति का उपकरण बनाया है। हमारे जीवन के दो पक्ष हैं-एक तो है क्रिया-पक्ष और दूसरा है-चिन्तन-पक्ष जो मन का काम है। हमारे कर्म भी दो प्रकार के हैं-एक कृत-कर्म और दूसरे हमारे मानसिक-कर्म। सभी कार्यों का आरम्भ मन से ही होता है। जो कार्य हम कर डालते हैं वह हमारे कृत कर्म हैं और जिन कामों को हम केवल सोचते हैं वह हमारे मानसिक कर्म हैं।

जीवन की सच्चाई यह है कि जैसा हमारे मन में आता है, वैसा ही हम बोलते हैं, और जैसा हम बोलते हैं, वैसा ही हम कर्म भी करते हैं। ऋषियों ने बताया है-इसका भाव यह हुआ कि हमारे कृत-कार्यों का बीज हमारे मानसिक-चिन्तन में बो दिया जाता है। अतः हम इस जीवन यज्ञ में पुण्यमयी मानसिक आहुतियाँ दें। अर्थात् हम अपने मानसिक जीवन में न पाप का चिन्तन करें, न पाप के संकल्प उठने दें। इसके लिए मंत्र में एक प्रार्थना की गई है कि हमारे जीवन यज्ञ में सुमनस्कता सम्पन्न दिव्य भावना वाले देव पुरुष आवें और हमें दिव्य-भावना का ही उपदेश करें।

दुर्योधन को सलाह देने वाला कर्ण और शकुनि था। दुर्योधन यदि कभी न्याय-संगत सोचता भी था तो कर्ण और शकुनि उसके चिन्तन को ईर्ष्या-द्वेष से भर देते थे। ऐसे कुटिल लोग हमारे जीवन में न आवें। प्रार्थना यह है कि हमें जिनका संग-साथ मिले वे सुचरित्र, सुविचारी, हों। हमें जो उपदेश मिले वह सुमनस्कता, सदाशयता का उपदेश मिले।

हमारे यज्ञ-मय जीवन को सफल बनाने के लिए भगवान ने हमारे भरण-पोषण के लिए दिव्य गुण सम्पन्न आँख और मुख दिए हैं। न हम कुदृश्य देखें, न कुखाद्य खाएँ, न दुष्ट श्रवण करें और देवताओं से यही प्रार्थना करें कि हमें दिव्य उपदेश मिलें जिससे विश्वकर्मा द्वारा निर्मित हमारा जीवन-यज्ञ सुमन और सुफल हो।

**'यन्मसा मनुते, तद्वाचा वदति।
यद् वाचा वदति, तत्कर्मणा करोति।।
यत् कर्मणा करोति, तदभि सम्पद्यते।।'**

अर्थात् हम मन में जैसा सोचते हैं वैसा ही वाणी से बोलते हैं। जैसा बोलते है, वैसा ही कर्म करते हैं। जैसा कर्म करते हैं वैसा ही हमारा जीवन हो जाता है।

हमारा जीवन एक यज्ञ है। इसके रचयिता विश्वकर्मा परमेश्वर हैं। मुख, नाक, आंख आदि सभी अंग-देव पूजा, संगतिकरण और दान से सम्पन्न हों।

शरीर में प्राण सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। पाँचों कर्मेन्दियाँ, पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ और मन, बुद्धि, चित्त, अहंकर, चारों अन्तःकरण प्राण के सहयोग पर ही अपना-अपना कार्य कर पाते हैं। प्राण सबमें ज्येष्ठ, श्रेष्ठ और वरिष्ठ है।

उपनिषद् में एक कथा आती है। एक बार इन्द्रियों ने अपनी महिमा का बखान करना आरम्भ कर दिया। आँख, कान, नाक सभी अलग-अलग कहने लगे कि मैं ही सबसे बढ़कर हूँ। उनका अहंकार देखकर प्राण ने कहा कि तुम लोग मोह में मत पड़ो, हमारे सहयोग के बिना तुममें से कोई भी कुछ न कर पाएगा। जब इन्द्रियों ने प्राण की बात पर अविश्वास किया तो प्राण ने कहा कि जिसका मन करे वह शरीर छोड़कर चला जाए। आँख चली गई, पर शरीर चलता रहा। कान चला गया तो भी शरीर चलता रहा। बारी-बारी से सारी इन्द्रियाँ गईं और आयीं पर शरीर चलता रहा। अब प्राण ने कहा कि अब आप लोग सँभलकर रहिए, अब मैं जा रहा हूँ। जैसे ही प्राण जाने लगा, आँख चिल्लाई-हमको कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा है। कान बोला-मैं भी नहीं सुन पा रहा हूँ, सारी इन्द्रियाँ प्राण से प्रार्थना करने लगीं-आप मत जाइए, हमारा कल्याण करिए, हमारी रक्षा करिए। वे प्राण की स्तुति करने लगीं।

**'प्राणस्येदं वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम्।
मातेव पुत्रान् रक्षस्व श्रीश्च प्रज्ञां च विधेहि न इति।।'**

अर्थात् तीनों लोकों में जो कुछ है वह सब कुछ प्राणों के ही वश में है। हे प्राणदेव! जैसे माता पुत्रों की रक्षा करती है, वैसे ही आप हमारी रक्षा करिए और हमें श्री, कांति, प्रज्ञा, सब प्रदान करिए। आप हमारे पूज्य हैं, हम आपके आधीन हैं।

यह हुआ जीवन यज्ञ में देव-पूजन का भाव। अब थोड़ा सा संगतिकरण और दान पर भी विचार करते हैं।

प्रभु ने हमारे शरीर में अद्भुत संगतिकरण किया है। एक उदाहरण लेते हैं-आँखों ने एक प्यारा सा, सुन्दर आम देखा। आँखों ने मन को सूचना दी, चित्त ने आम की सुगन्ध, स्वाद और स्पर्श को संबद्ध इन्द्रियों को सूचित किया। नाक, रसना आदि में स्फुरण हुआ और संबन्धित ग्रन्थियों से प्रतिक्रिया आरम्भ हो गई। आम खाया गया, पेट में जठराग्नि ने पचाया, रक्त, मांस, ओज, तेज सब अपनी-अपनी जगह पर अपना अंश प्राप्त कर रहे हैं और जो उपयोग में न आ सका वह मल-मूत्र रूप में बाहर चला गया। कैसा अद्भुत समन्वय सामंजस्य और दान का उदाहरण है। कोई अंग कुछ संचय नहीं करता। सब अपना कार्य करके आगे के लिए दान कर देते हैं।

हृदय तो अशुद्ध रक्त का हरण करके शुद्ध करता है, शुद्ध रक्त को सारे शरीर को दान करके गति पहुँचाता है। हृदय के तीनों अक्षर बताते हैं-हृ-हरण करना, द-दान करना, य-गति करना। यह भी संगतिकरण और दान का अद्भुत उदाहरण है।

शरीर के यज्ञ रूप को विश्वकर्मा ने अद्भुत बनाया है। कल्पना करते हैं कि शरीर में आँख, कान, नाक, पेट या नाखून-कहीं पीड़ा हो रही है। वैद्य या डॉक्टर ने एक छोटी सी गोली खाने को दी और उसका प्रभाव शरीर के उसी स्थान विशेष पर पड़ता है और पीड़ा दूर हो जाती है। यह भी विश्वकर्मा भगवान की व्यवस्था में समन्वय और दान का कितना सुन्दर उदाहरण है।

एक्यूप्रेशर (Accupressure) के सिद्धान्त से हाथ और पैर के विशेष-विशेष बिन्दुओं से सम्पूर्ण शरीर के विशेष-विशेष अंगों का संबंध प्रकट होता है। यह भी शरीर के विभिन्न अंगों में समन्वय सामंजस्य का विलक्षण स्वरूप है।

हमारा जीवन परमेश्वर ने यज्ञ रूप बनाया है और परमेश्वर के इस यज्ञ को हम देवताओं का दिव्य यज्ञ बनाएँ, यह हमारा परम पुनीत कर्त्तव्य है।

वेद-वीथिका से साभार

☞ पृष्ठ 03 का शेष

अन्तःकरण ...

वर्तमान को हम पकड़ सकते हैं... अन्तःकरण का चौथा तत्त्व अहंकार बताया गया है। इसके दो भाव हैं एक तो अहं-भाव और दूसरा मम-भाव। प्रभु की उपासना करने वाले तथा उसके रक्षण में जाने वाले व्यक्ति को अपने अहं-भाव का त्याग करना चाहिए और अपने मम-भाव अर्थात्अपने स्वरूप की पहचान करनी चाहिए। इस प्रकार अपनी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों तथा मन, बुद्धि और चित्त का सदुपयोग करेंगे तो निश्चित् ही प्रभु हमारे रक्षक बन जाएँगे.....

-महर्षि दयानन्द धाम, महादेव
सुन्दरनगर-175018, (हि.प्र.)

हिन्दुस्तानी गवाह अक्सर घबरा जाते थे

● स्व. श्री बलराज भल्ला

"हमारी गवाही न दी हश्र के दिन, हुए कुछ इधर कुछ उधर लोग टल कर।"

–दाग

रासबिहारी के सम्बन्ध में दो चार शब्द कहे बिना मेरे सहाभियोगियों का वर्णन पूरा नहीं हो सकता। क्या रासबिहारी जासूस था? इस प्रश्न का उत्तर समय ने दे दिया है। मैंने अपने बयान में, जो मैंने जज साहिब के सामने दिया, कहा कि मैं रासबिहारी को नहीं जानता, यह बिलकुल ठीक नहीं था। मैंने रासबिहारी को सबसे पहले देहरादून में देखा। 1910 में नहीं, जबकि पुलिस कहती है मैं रघुवर शर्मा को मिलने के लिए गया। न ही 1911 में लाहौर में, जब दीनानाथ कहता है कि रासबिहारी ने नाभाहाऊस में मुझे बलराज से वाकिफ़ कराया। मुझे रासबिहारी ने दीनानाथ से कभी इंट्रोड्यूस नहीं कराया। वस्तुतः उस समय मैं रासबिहारी को जानता तक न था। किस वर्ष मेरी उससे देहरादून में मुलाकात हुई, मुझे याद नहीं। मैंने उससे कभी पत्रव्यवहार नहीं किया, इसलिए यह मुलाकात कभी मित्रता में परिणत न हुई। मेरे कई पाठक शायद अपने आप से पूछते होंगे 'बलराज तकरीबन हर एक को कैसे जानता था?' इसके लिए कोई कारण होना चाहिए। इस कारण को ढूँढ़ना कोई कठिन काम नहीं। मेरे पिता के नाम ने और छोटी अवस्था में ही मेरे देश–पर्यटन ने मुझे बहुत मनुष्यों से शीघ्र ही वाकिफ़ बना दिया, परन्तु यह कहना ठीक न होगा कि मेरी उनसे मित्रता हो गई या अब भी है। जिस स्थान पर मैं एक दिन के लिए भी रहता हूँ, मेरी वाकफ़ियत 40–50 भद्रपुरुषों से हो जाती है। परन्तु दूसरे दिन ही मैं जब उस स्थान का त्याग कर देता हूँ तो स्वाभाविकतया मैं उन सब को भूल जाता हूँ। रासबिहारी का सम्बन्ध इस अभियोग से कहाँ तक था, कहना कठिन है। भाई बालमुकुन्द की माफ़िक वह बिलकुल निर्दोष था, मैं यह भी नहीं मानता। फरवरी 1914 में वह लाहौर में विद्यमान था, इसमें अब मुझे कुछ भी संदेह नहीं। लाहौर से वह देहली गया। मास्टर अमीरचन्द के घर को पुलिस से घिरा हुआ पाकर वह कलकत्ते की ओर चला गया। मैं अक्सर उसके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में ला. अवधबिहारी जी से सुना करता था। कभी–कभी हमें खबर मिलती थी कि आज वह पुलिस से कैसे बचा और अब बिलकुल सुरक्षित है। कहाँ और किस स्थान पर है, मैंने न तो कभी किसी से पूछा और नहीं कभी किसी ने बतलाया। ये खबरें कौन लाता था, मेरे लिए कहना कठिन है, परन्तु इनकी सत्यता में मुझे कुछ संदेह नहीं। अभियोग खत्म होने के बाद मुझे मुलतान जेल में किसी ने बतलाया कि वह जापान चला गया था और अब फिर सिखों के बहाव के साथ भारत को वापस लौट आया है। यह बात सत्य हो सकती है, क्योंकि शीघ्र ही उसका नाम फिर से सिखों के अभियोग में और बनारस–केस में प्रकट होने लगा। राजद्रोही है या राजभक्त, इस बात में कोई संदेह नहीं कि वह एक प्रबल व्यक्ति है। मृत्यु के मुँह से निकल कर फिर अपने शत्रुओं से लड़ने के लिए कराल काल के विकट मुख में प्रवेश करना रासबिहारी का ही काम हो सकता है। जब बीसियों सिख फाँसी पर लटक गए और सैकड़ों आयुभर के लिए जेल भेजे गए, जब उसका निज का नौकर तीन वर्ष के लिए कैद हो गया और पुलिस उसे पकड़ते–पकड़ते ही रह गई, वह अपनी जान को हथेली पर रखकर देशभर में घूमता हुआ पासपोर्ट की व्यवस्था होते हुए भी दूसरी बार जापान चला गया। एक बार अंग्रेजी सरकार के रोब के नीचे दबकर जापानी गवर्नमैंट ने भी उसे जापान छोड़ जाने की आज्ञा दे दी, परन्तु शीघ्र ही जापानी सरकार ने अपनी आज्ञा को वापस ले लिया और उसे एक जापानी की हैसियत से जापान में रहने की अनुमति दे दी।

पाँच सप्ताह के अन्दर 200 से अधिक सरकारी गवाह भुगत गए और तकरीबन एक और मास में हमारे गवाह भुगत कर मुकदमा खत्म हो गया। इस अरसे में विशेषकर एक दो बातें अवलोकनीय थीं। अंग्रेज गवाहों का रवैया देसी गवाहों से बिलकुल भिन्न था। हर एक अंग्रेज, चाहे वह एक साधारण पुरुष हो अथवा हमारा तरफदार, बयान देते समय स्वभावतः साफ पुरमतलब (सारयुक्त) और विषय से सम्बद्ध बयान देता था। इसके ठीक विरुद्ध हिन्दुस्तानी गवाह, चाहे कितनी बड़ी हैसियत के क्यों न हों, अक्सर घबरा जाते थे और बहुधा एक बात पूछने पर दूसरा ही उत्तर दे देते थे। ऐसा प्रतीत होता था, मानो वे गवाही देते समय अपनी निर्दोषता का सबूत सबसे पहले पेश करना चाहते थे। यह नियम साधारण था और दोनों ओर ऐसी ही स्थिति थी। पाठक यह न समझ लें कि अंग्रेज सदा सच ही बोलते थे और देशी सदा झूठ। सत्य और असत्य के साथ काले और गोरे चमड़े का कोई सम्बन्ध नहीं है। दोनों जातियों के अन्दर दोनों प्रकार के मनुष्य मौजूद थे। उदाहरण के तौर पर पीटरी साहब पुलिस के एक बड़े अफसर थे। आपने अपने बयान में ला. अमीरचन्द के मकान की डिस्क्रिप्शन (वर्णन) देते हुए कहा कि एक विशेष कमरे के अन्दर कोई झरोखा न था और जो झरोखा अब मौजूद है, वह तलाशी के बाद बनवाया गया है। यह तथ्य बहुत जरूरी था, क्योंकि उस कमरे में बम की एक टोपी पुलिस को प्राप्त हुई थी। कुदरती तौर पर डिफ़ेंस उस झरोखे की मौजूदगी का फायदा उठाना चाहता था कि हो सकता है बाहर के किसी व्यक्ति ने इस झरोखे के रास्ते यह डिब्बा अन्दर रख दिया हो। पुलिस इसलिए इस बात पर कीन (आग्रहयुक्त) थी। पीटरी और हैडो दोनों साहबों ने बेधड़क होकर निश्चित रूप से यह कह दिया कि तलाशी के रोज वह झरोखा मौजूद न था। हो सकता है उन दोनों का मुगालता (गलती) हुआ हो और उन्होंने उस दिन झरोखा न देखा हो। परन्तु ऐसी हालत में उनका यह कह देना कि झरोखा मौजूद न था, और अब नया बनाया गया है, सत्य से कहीं दूर था। मास्टर जी ने इसके सम्बन्ध में जो कुछ मुझे कहा, मैं कोई कारण नहीं समझता, वह क्यों असत्य हो? आपने मुझे यकीन दिलाया कि झरोखा वहाँ कई महीनों से मौजूद है, कोई नई बनावट नहीं और साथ ही यह भी बतलाया कि बम की टोपी वहाँ अवश्य मौजूद थी, इसमें पुलिस की कोई शरारत नहीं। ऐसे हालात में मैं नहीं समझ सकता, मास्टर जी को मेरे से झूठ बोलने का क्या तात्पर्य था? उस समय मैंने मास्टर जी को सुझाव दिया कि इस झरोखे के सम्बन्ध में विश्वासघाती सुलतानचन्द की गवाही दिलवानी चाहिए। क्योंकि वह हमारी पहुँच से परे है, वह अवश्य ही सत्य कहेगा और उसकी बात पर विश्वास किया जाएगा। इस पर मास्टर जी ने सुल्तानचन्द की गवाही के लिए प्रार्थना की। सुलतान ने अपनी गवाही में मास्टर जी की बात की पुष्टि की, परन्तु जज साहिब ने इसको सत्य नहीं माना, कारण उसके विरुद्ध दो सफ़ेद चमड़े वाले थे। जब नार्टन साहिब मेरे लिए बहस कर रहे थे, तब भी एक ऐसी बात पर जज साहिब ने नार्टन को पूछते हुए कहा–"क्या पीटरी झूठ बोलता है?" नार्टन साहिब को भी सफ़ेद का फ़खर था। आपने झट कहा–"क्या पीटरी खुदा है? क्योंकि उसका चमड़ा सफ़ेद है, क्या इसलिए वह असत्य बोलने के असमर्थ है? यदि पीटरी जो कुछ कहता है, सत्य है तो न ही बाकी गवाहों की जरूरत है और न ही मेरी बहस का कोई फ़ायदा है। तुम फैसला सुना सकते हो।" इस पर जज साहिब तलख हो उठे और कहने लगे–"क्या यह कचहरी का अपमान नहीं?" नार्टन ने कहा–"नहीं" और बात खत्म हो गई। क्या और कोई ऐसा कह सकता था? मेरे लिए इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है।

इस्तगासे ने क्या साबित करने का प्रयत्न किया, हमारे गवाहों ने कहाँ तक उसको तोड़ने में सफलता प्राप्त की, इसके सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं कहना चाहता। कारण एक तो यह सब कुछ समाचार–पत्रों में छप चुका है, इसलिए किसी को रोचक नहीं होगा, दूसरा मेरा बयान अन्य पुरुषों के बने हुए विश्वासों को आसानी से तोड़ नहीं सकता। जो पत्र मेरे विरुद्ध पेश किया गया और जिस पर पुलिस का दारोमदार था, उसका अनुवाद मैं अपने पाठकों के समक्ष इसलिए पेश करना चाहता हूँ कि वे उसे पढ़ कर स्वयं अपने विचार कायम कर लें। यह पत्र मई 1911 में मैंने बालमुकुन्द भाई जी को लिखा था। जब भाई जी बीमार होकर बी.ए. की परीक्षा में न बैठते हुए ऐबटाबाद चले गए, तो आप इससे पूर्व ही फैसला कर चुके थे कि आप अपना जीवन आर्यसमाज अथवा अछूत जातियों की सेवा में व्यतीत करेंगे और अपने पालन–पोषण के लिए नाममात्र का एलाउंऐंस लिया करेंगे। इस पत्र को लिखने के थोड़ी देर बाद ही आपने जो सामाजिक और पतित–उद्धार के निमित काम मीरपुर, कोटली और राजौरी के इलाके में किया, उससे वहाँ के निवासी खूब परिचित हैं। बकौल दीनानाथ, इन बातों को सम्मुख रखते हुए मेरे पाठक पत्र के आशय को समझने में समर्थ होंगे।

आप अक्सर पत्र फाड़ डाला करते थे, परन्तु यह पत्र उन्होंने अपनी धर्मपत्नी को दिखलाने के लिए रख छोड़ा। एक–दो सप्ताह बाद आपका विवाह हो गया और आपने यह पत्र अपनी अर्धांगिनी को दे दिया। उन्होंने इसे अपने कपड़ों में रख दिया और भूल गईं। तीन वर्ष बाद यह पत्र पुलिस के हाथ लग गया और इसको उस कांड का एक सबूत समझा गया, जो 1912 अक्टूबर में आरम्भ हुआ। पत्र लम्बा होने के कारण मैं यहाँ केवल उसका वह भाग उद्धृत करता हूँ, जो विशेष तौर पर आवश्यक समझा गया:–

"राजद्रोह के अभियोग में मुलज़िमों को जो तकलीफ़ अपने गवाह पेश करने में होती है, वह अकथनीय है। प्रथम तो कोई पुरुष डिफ़ैंस की ओर से उपस्थित होना पसंद ही नहीं करता। यदि वह सरकारी तौर पर बुला ही लिया जाए, तो हर प्रश्न पर उसका प्रयत्न अपनी राजभक्ति साबित करने का होता है। यदि उसका नाम सरकारी लिस्ट से बच निकले, तो निजी तौर पर पेश होने के लिए उसे मजबूर करना नामुमकिन हो जाता है। जो कोई दिलचले तैयार भी हो जाते हैं, उन्हें जो तकलीफ़ें भुगतनी पड़ती

हैं, वे दूसरों को रोकने के लिए काफ़ी भयानक और डरावनी होती हैं। दरअसल इनको पुलिस के लिए गवाह तैयार करना बहुत आसान होता है। पहले तो पुलिस जिस गवाह को सख्त देखती है, उसके घर की तलाशी लेकर अथवा चार दिन उसे हवालात में रखकर नर्म कर लेती है। अगर वह बिलकुल असाध्य हो, तो उसका नाम मुलज़िमों में लिख देती है। अक्सर लोग तो 'सच' बोल कर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं। कोई–कोई मिजाज–बिगड़े पुलिस के सामने हाँ करके मजिस्ट्रेट के सामने अनभिज्ञ बन जाते हैं। कोई–कोई एक अदालत में कुछ और, और दूसरी अदालत में कुछ और कह कर अपनी जान जोखिम में डाल लेते हैं और दूसरे परीक्षा में असलियत पर थोड़ी बहुत रौशनी डाल कर अपनी ज़मीर से सुलह कर लेते हैं।"

अमरनाथ, मालिक, पौपुलर डिस्पैन्सरी लाहौर, की गवाही इस बात का एक अच्छा नमूना है। उसने बसंतकुमार के संबन्ध में कहा '17 मई 1913 को मैं दफ्तर में बैठा हुआ अखबार पढ़ रहा था, बसंतकुमार मेरे निकट खड़ा था। दीनानाथ आया और उसने अपनी बाइसिकल बाहर थड़े पर छोड़ दी। बसंतकुमार ने ट्विल की कमीज और धोती पहनी हुई थी। सिर नंगा था। और उसके हाथ में छड़ी थी।' हो सकता है, यह सब कुछ ठीक हो। परन्तु मुझे यह विश्वास नहीं आ सकता कि 17 मई 1913 की छोटी–छोटी घटनाएँ किसी को 27 जून 1914 को ठीक–ठीक याद रह सकती हैं जबकि वे घटनाएँ किसी जगह पर लिखी हुई नहीं। मैं नहीं जानता, यदि अमरनाथ यह बतला सकता है कि उस दिन उसने स्वयं क्या पहना हुआ था अथवा उस दिन उसने क्या खाया था। निस्संदेह उसकी स्मरणशक्ति सर्वथा अतिमानुषिक होगी यदि वह मुझे बतला सके कि अपनी शादी के रोज उसके भाई अथवा किसी और रिश्तेदार ने क्या–क्या कपड़े पहने हुए थे। मेरे लिए तो यह कहना कि पांच दिन हुए मैंने बूट पहना हुआ था व जूता, कठिन है।

दो सौ से अधिक गवाहों में से दयालसिंह कालेज का विद्यार्थी पूर्णचन्द ही केवल एक ऐसा मनुष्य था, जिसने जज के सामने यह कहने की जुर्रत की "मैं कुछ नहीं जानता। पुलिस मुझे दिनभर बिठाये रखती थी और अब भी हथकड़ी लगा कर यहाँ लाई है।"

गिरधारीलाल सरकारी गवाह का बयान इस विषय में अद्‌भुत था। उसने तीन न्यायाधीशों के सामने अपना बयान दिया और सब स्थानों पर भिन्न–भिन्न। ऐसा प्रतीत होता है ज्यों–ज्यों समय व्यतीत होता गया, पुलिस का डर उतरता गया और वह अपना बयान बदलता गया। अंत में कई प्रश्नों का उत्तर ठीक–ठीक न देने के लिए उसको एक सप्ताह शाही होटल (जेल) में ठहरना पड़ा।

इस विषय में लाला ठाकुरदास लाहौर–निवासी की बसंतकुमार के संबन्ध में जो गवाही बाईसिकल के मुतल्लक हुई, वह एक उदाहरण के तौर पर पेश की जा सकती है। 'पुलिस पहले 21 फरवरी को मेरे पास आई और तीन घंटे ठहरी। उस दिन बाईसिकल का कोई जिकर नहीं किया। 26 को पुलिस फिर आई उस दिन भी मैंने बाईसिकल का कोई जिकर नहीं किया। 27 को पुलिस ने मेरे साथ अमरनाथ को मोरी दरवाजे बुलाया। पहली मार्च को हम दोनों कोतवाली गए। वहाँ इन्स्पैक्टर अब्दुल अजीज ने कहा 'बसंतकुमार ने लाहौर बम फैंका है और तुम्हारी गिरफ्तारी का हुक्म निकल चुका है। क्योंकि मैं तुम दोनों को निर्दोष समझता हूँ, इसलिए मैं तुम्हारे खिलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं करूँगा। परन्तु तुम्हें सच–सच बतलाना होगा जैसा कि तुम पीछे बतलाते रहे हो।' हमने कहा हम सच–सच बतलाएँगे हमने बाईसिकल का कोई जिकर बिना पूछे नहीं किया। तब उसने कहा "दीनानाथ कहता है कि उसने 17 को बाईसिकल तुम्हारे यहाँ छोड़ी और रातभर तुम्हारे पास ही रही। क्या तुम्हें बाईसिकल की बाबत याद है?" पहले मैंने कहा, मुझे कुछ याद नहीं। तब अब्दुल अजीज ने दीनानाथ से जाकर पूछा और फिर वापिस लौट कर कहा–"जो कुछ कहा गया है, सत्य है। दीनानाथ ने एक बाईसिकल रातभर तुम्हारे दवाई–खाने में रखी थी।" अमरनाथ और मैंने विचार किया और याद किया कि एक रात के लिए बाईसिकल रखी गई थी। इसी संबन्ध में अमरनाथ की गवाही भी पढ़ने योग्य है। बाईसिकल के मुतल्लक मेरा पहला बयान पहली मार्च को हुआ। इन्स्पैक्टर ने पूछा था, 17 की रात को दवाखाने में कोई बाईसिकल थी? मैंने उत्तर दिया, मैं नहीं जानता। इन्स्पैक्टर ने कहा 'दीनानाथ यूँ कहता है और यह सत्य है, याद करो।' मैंने कहा यदि दीनानाथ याद कराए, तो याद आ जाए। जब दीनानाथ ने मुझे याद दिलाया, तो मुझे याद आ गया। अब्दुल अजीज जी ने कहा, अमरनाथ यूँ कहता है, मैंने दीनानाथ को रखते नहीं देखा। यह सब बात–चीत कोतवाली में हुई। क्या अंग्रेजी भाषा में इसी को तलवार की नोक पर याद कराना कहते हैं?

दोनों ओर की गवाहियाँ खत्म हो जाने पर वकीलों को अन्तिम युद्ध की तैयारी के लिए करीबन एक सप्ताह दिया गया। यह सप्ताह साधारण की तरह जेल में मुश्किल से कटने लगा। मैंने सुपरिटेंडेंट से कहकर लिफाफे बनाने का काम ले लिया और दिन के एक दो घंटे इसमें काटने लगा। दिन गिन–गिन कर सप्ताह काटा। मेरी ओर से नार्टन साहिब ने गोलाबारी आरम्भ की। आपने जो कुछ तकरीर में दाएँ–बाएँ फैंका, वह केवल एक अंग्रेज ही जुर्रत कर सकता है। कई रोज तक बहस होती रही। दोनों तरफ से किसी किस्म की कमी न छोड़ी गई। आलस्टन साहिब कभी–कभी जज साहिब की गैर–हाजिरी में हम सब से भी एक–आध झपट ले लेते और मुस्कराते हुए कह देते "फिकर न करो, दस साल से कम तो न होने दूँगा।" ऐसा प्रतीत होता था, आपका आदर्श "दस साल" का था। शायद आप यह नहीं जानते थे कि जज साहिब इस्तगासे से भी अधिक सजा देने के लिए आकांक्षित थे। हमारे वकील भी अक्सर कहा करते थे, अव्वल तो तुम सब रिहा हो जाओगे अथवा अधिक से अधिक मास्टर जी जैसे एक–दो आदमी, जिनके यहाँ से 'स्वतन्त्रता' के परचे और दूसरी राजद्रोह–सम्बन्धी पुस्तकें निकली थीं–पाँच साल के लिए जेल जाएँगे। बाकियों का तो बाल तक बाँका नहीं हो सकता। मुझे इस बात पर बिल्कुल विश्वास न था। फँसे हुए पक्षी को शिकारी कैसे छोड़ सकता है, मैं अपने आप से बहुधा पूछा करता था। साथ ही मेरा यह भी विचार था कि इस्तगासा अतिनिर्बल होने के कारण सजा किसी को भी अधिक नहीं हो सकती। निर्णय के पूर्व नार्टन साहिब ने जो कुछ एकांत में मुझे कहा, उसने मेरे विचारों को और भी दृढ़ कर दिया।

'देहली–बम–रहस्योद्‌घाटन' से साभार

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

बोध कथाएँ

फल स्वामी दयानन्द ने आपके लिए दिए हैं।''

साधु ने दयानन्द का नाम सुनते ही कहा– ''अरे! यह प्रातःकाल किसका नाम ले लिया तूने? पता नहीं, आज भोजन भी मिलेगा या नहीं। चला जा यहाँ से! मेरे लिए नहीं, किसी दूसरे के लिए भेजे होंगे। मैं तो प्रतिदिन उसे गालियाँ देता हूँ।''

उस व्यक्ति ने महर्षि के पास आकर यही बात कही।

महर्षि बोले– ''नहीं, तुम फिर उसके पास जाओ। उसे कहो कि आप प्रतिदिन जो अमृत–वर्षा करते हो, उसमें आपकी पर्याप्त शक्ति व्यय होती है। इन फलों का प्रयोग कीजिए, जिससे आपकी शक्ति बनी रहे और आपकी अमृत–वर्षा में न्यूनता न आए।''

साधु ने यह सुना तो घड़ों पानी उसके ऊपर पड़ गया। निकला अपनी कुटिया से, दौड़ता हुआ पहुँचा महर्षि से पास। उनके चरणों में गिर पड़ा; बोला– ''महाराज! मुझे क्षमा करो। मैंने आपको मनुष्य समझा था, आप तो देवता हैं!''

यह है सहनशीलता का जादू! जिसमें यह सहनशीलता उत्पन्न हो जाती है, उसके जीवन में एक अनोखी मिठास, एक अद्‌भुत सन्तोष और एक विचित्र प्रकाश आ जाता है।

सहनशक्ति ने सास का स्वभाव बदल दिया

एक युवती नव–वधू बनकर ससुराल में आई तो जो सास उसको मिली– हे मेरे भगवान्! दिन में दो–तीन बार जब तक लड़ ने लेती, उसे भोजन नहीं पचता था। वधू आई तो उसने सोचा– 'अब घर में ही लड़ लो। बाहर लड़ने के लिए काहे को जाना?'' बहू को वह बात–बात पर ताने देने लगी– ''तुम्हारे बाप ने तुम्हें क्या सिखाया है? तुम्हारी माँ ने तुम्हें क्या यही शिक्षा दी है? तेरी जैसी मूर्खा तो मैंने कभी देखी नहीं।''

बहू यह सब–कुछ सुनती और सुनकर भी मौन ही रहती। सास चिल्लाकर कहती– ''अरी! तेरे मुख में जीभ नहीं है?'' बहू फिर भी शान्त बनी रहती।

उसके मौन को देखकर सास का जिह्वारूपी घोड़ा क्रोध की सड़क पर द्रुत–गति से दौड़ने लगता। प्रतिदिन ऐसा ही होता। पास–पड़ोस के सभी लोग इस व्यवहार को देखते, मन ही मन सोचते यह सास है या डायन?

एक दिन वह इसी प्रकार बहू पर बरस रही थी, पर बहू मौन थी। सास कह रही थी– ''अरी, पृथिवी पर लात मारें तो वह भी शोर करती है और मैं इतना बोल रही हूँ, फिर भी तू चुप है। तू तो मिट्टी से भी गई–बीती है!''

तभी एक पड़ोसिन ने कहा– ''बुढ़िया! लड़ने की बहुत इच्छा है, तो आकर हमसे लड़। तेरा चस्का पूरा हो जाएगा। इस बेचारी गाय के पीछे क्यों पड़ रही है, जो उत्तर भी नहीं देती?''

वधू ने तुरन्त उठकर कहा– ''नहीं, इन्हें कुछ भी मत कहिए। ये मेरी माँ हैं। माँ ही बेटी को नहीं समझाएगी तो फिर कौन समझाएगा!''

सास ने यह बात सुनी तो लज्जित हो गई। फिर कभी उसने क्रोध नहीं किया। बहू की सहनशक्ति ने सास का स्वभाव बदल दिया।

क्रमशः

चमत्कारों का पोलखाता

● इन्द्रजित्देव

विज्ञान का एक सर्वमान्य नियम है– **बिना किसी कारण कार्य नहीं होता।** लोहे बिना रेल का पहिया अथवा पटरी बन नहीं सकती। लोहा रेल का कारण तथा रेल का पहिया अथवा पटरी कार्य हैं। इस प्रकार रोटी कार्य है तो आटा कारण है। आटा को कार्य भी माना जा सकता है। तब इस कार्य का कारण गेहूँ माना जाएगा। इसी व्यवस्था को वैशेषिक दर्शन (4/3) में कहा है– **कारणभावात् कार्यभावः।** इसी प्रकार इस सृष्टि का भी कोई–न–कोई कारण तो होगा ही। यह वैदिक सिद्धान्त आज का विज्ञान भी स्वीकार कर चुका है– Matter cannot created nor it can be destroyed. विज्ञानवेत्ताओं ने स्पष्ट घोषणा की है कि जहाँ Material Cause (उपादान कारण) नहीं होगा, वहाँ वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने क्रान्तिकारी ग्रन्थ *"सत्यार्थप्रकाश" के अष्टम समुल्लास* में लिखा है– **"साकार वस्तु से ही साकार वस्तु बनती है।"** सांख्यदर्शन 1/43 में भी लिखा है– **"नावस्तु वस्तुसिद्धिः"** अर्थात् जो वस्तु कारण में नहीं है, वह कार्य में भी नहीं आ सकती। सांख्य दर्शन 1/83 में भी लिखा है– **'कारण–भावच्च'** अर्थात् कार्य का अस्तित्व कारण को छोड़कर पृथक् नहीं होता।

इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन गीता के 12वें अध्याय के 16 वें श्लोक में भी किया है–

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।।

अर्थात् यदि कोई वस्तु वर्तमान नहीं है तो उसका वर्तमान (=उपस्थित) नहीं हो सकता तथा यदि उपस्थित है तो वह अनुपस्थित हो जाए, ऐसा नहीं हो सकता। इन दोनों तथ्यों का निर्णय तत्वदर्शियों अर्थात् प्रकृति तथा परमाणुओं का साक्षात्कार करने वाले विद्वानों ने किया है।

जगत् तथा वस्तु के कारण व कार्य को यदि हम सच्चाई व गहराई से जान लें तो संसार में प्रचलित अन्धविश्वासों व कथित चमत्कारों की पोल–पट्टी खुल सकती है। पहले हम जगत् के 3 कारणों को समझते हैं, फिर चमत्कारों की पोल–पट्टी खुलेगी। पहला कारण है उपादान कारण। उपादान का अर्थ है– जिसके बिना कुछ न बने। वैज्ञानिकों ने इसे अंग्रेज़ी में Material Cause स्वीकारा है। स्वर्ण से आभूषण बनते हैं। घड़ा मिट्टी से बनता है। रोटी आटे बिना नहीं बनती। वस्त्र रुई से बनता है। ये सब उपादान कारण अर्थात् पदार्थ हैं।

यह भी सत्य है कि इनमें से कोई एक भी वस्तु अपने–आप नहीं बनती। लाखों वर्षों तक लोहा पड़ा रहे तो रेल का पहिया या दरवाज़ा अथवा बाल्टी नहीं बन सकता। स्वर्ण से आभूषण, मिट्टी से घड़ा, रुई से वस्त्र, आटे से रोटी तथा लोहे से रेल का पहिया, दरवाज़ा या बाल्टी अपने–आप नहीं बनती। इन्हें बनाने वाला कोई–न–कोई व्यक्ति अवश्य होना चाहिए, जिसके बनाने से बने। यह दूसरा कारण है– निमित्त। आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसको अंग्रेज़ी में Efficient Cause कहा है। स्वर्ण से आभूषण बनाने वाला स्वर्णकार निमित्त कारण है। मिट्टी से घड़ा बनाने वाला कुम्हार निमित्त कारण है। आटे से रोटी बनाने वाली हमारी माँ निमित्त कारण है। लोहे से बाल्टी या दरवाज़ा बनाने वाले को लोहार कहना होगा।

तीसरा कारण साधारण कारण माना जाता है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे अंग्रेज़ी में Formal Cause नाम से अभिहित किया है। दुकान में स्वर्ण पड़ा हो, स्वर्णकार भी वहाँ उपस्थित हो तो क्या आभूषण बन जाएगा? स्वर्णकार को हाथ, आंख, प्रकाश, काल व अग्नि आदि अपेक्षित है, इनके बिना वह आभूषण नहीं बना सकता। घड़ा, बाल्टी, वस्त्र व रोटी आदि बनाने के लिए भी यही नियम लागू होता है। उपकरणों व प्रयोजनों का होना भी अनिवार्य है। आभूषण, रोटी, घड़ा व दरवाज़ा आदि किस काम आएँगे? किसके काम आएँगे, इनके प्रयोजन क्या हैं?

इस आधार पर यह संसार, यह सृष्टि या जगत् भी बिना कारण नहीं बन सकता था, न ही बिना कारण बना है। यह बनाया गया है, इसका सृजन किया गया है। इसीलिए इसे सृष्टि भी कहते हैं। यह अनित्य है। यह बनाई गई है। बनाने से पूर्व यह न थी। यह प्रकृति जो नित्य वस्तु है, से बनाई गई है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे अंग्रेज़ी में Matter कहकर स्वीकार किया है।

सृष्टि साकार है तो प्रकृति भी साकार है क्योंकि साकार वस्तुओं से ही साकार वस्तु उत्पन्न होगी। परमेश्वर क्योंकि निराकार है, अतः उससे सृष्टि या जगत् उत्पन्न हुआ, यह मानना सर्वथा असत्य है। सृष्टि प्रकृति से सृजित की गई। उसके बिना सृष्टि बन नहीं सकती थी। अतः प्रकृति उपादान कारण (Material Cause) है। वह जड़ पदार्थ है। अपने आप कुछ नहीं कर सकती। परमेश्वर सृष्टि का निमित्त कारण (Efficient Cause) है अर्थात् ईश्वर ने प्रकृति से सृष्टि या कहिए जगत् बनाया परन्तु किस प्रयोजन तथा किन उपकरणों से सृष्टि या जगत् को बनाया? यह भी विचारणीय है। मिट्टी के अतिरिक्त चाक आदि सहायक कारण तथा घड़ा किस काम आएगा, जिसके काम आएगा, इसका प्रयोजन क्या होगा– यह सब जानना भी आवश्यक है। स्पष्ट उत्तर यह है कि जो सृष्टि का भोग करता है अर्थात् जीव, यह सृष्टि उसी के लिए बनाई गई है। उसे FORMAL CAUSE अर्थात् साधारण कारण कहा जाता है। ईश्वर का ज्ञान, ईश्वर की शक्तियाँ आदि उपकरण भी साधारण कारण ही हैं।

इस विश्लेषण के विपरीत कुर्रान (मं. 1/सि. 1/सू. 2 आ. 117) के अनुसार खुदा ही आरम्भ में था। शेष कुछ भी न था। वह भूमि और आसमान को उत्पन्न करने वाला है तथा उसे कुछ करना नहीं पड़ता। वह जो कुछ करना चाहता है, वही कहता है= **हो जा (=कुन)** तो वह हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ऐसा मानने वालों से पूछा है कि **'हो जा'** वाला आदेश किसको दिया गया? किसने सुना? कौन–क्या बना? किस पदार्थ से बना? किसके लिए बना? जब यह मानते हो, कहते हो कि खुदा के सिवाय कोई वस्तु न थी तो यह विशाल–विस्तृत ब्रह्माण्ड बिना Material Cause अर्थात् उपादान कारण के कैसे बन गया? तुम एक मक्खी की एक टांग ही बनाकर दिखाओ। ईसाई भी बाईबल के अनुसार ऐसा ही मानते हैं तथा उनसे भी यही हमारे प्रश्न हैं।

पौराणिकों का विचार यह है कि जैसे मकड़ी बाहर से कोई पदार्थ नहीं लेती, अपने शरीर से ही तन्तु निकालकर जाला बना लेती है, ऐसे ही परमेश्वर अपने में से ही सृष्टि को बना लेता है। पौराणिकों (हिन्दुओं) से हमारा निवेदन है कि मकड़ी अपने शरीर में उपस्थित जड़ प्रकृति से बने जड़ पदार्थों से जाला बनाती है। अपनी आत्मा से वह कुछ पदार्थ निकालकर कुछ नहीं बना सकती। साकार वस्तु साकार वस्तु से ही बनती है, यह बात पहले भी लिखी गई है। मकड़ी का आत्मा निराकार है तथा निराकार से साकार वस्तु बन ही नहीं सकती। मकड़ी की आत्मा निमित्त कारण है। उसका जड़रूप शरीर तन्तु का उपादान कारण है।

इस सम्बन्ध में महर्षि कपिल का यह सूत्र विचारणीय है–

नावस्तुनो वस्तुसिद्धिः। –सांख्यदर्शनम् 1/43

अर्थात् अवस्तु से वस्तु की सिद्धि नहीं होती। कार्यमात्र का आदान वस्तुभूत होना चाहिए।

पूर्वोक्त तीनों कारणों को समझ लें तो बहुत–से अन्धविश्वास, पाखण्ड व कथित चमत्कार समाप्त हो सकते हैं। मुझे स्मरण है कि सन् 1972 में सत्यसाईं बाबा अपना एक 'चमत्कारपूर्ण' प्रदर्शन करके घड़ियाँ, भस्म व अंगूठियाँ निकालकर बाँट देता था। दर्शक यही मानते थे कि यह बाबा अपनी अलौकिक सिद्धियों से ऐसा चमत्कार करता है। तभी कर्णाटक के एक विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने उसे चुनौती भरा पत्र लिखा था– **"आप मेरे यहाँ आकर रात्रि विश्राम करें। अगली प्रातः मेरे सामने स्नान करें तथा वस्त्र पहनें। तत्पश्चात् मैं आपको विश्वविद्यालय में ले चलूँगा। वहाँ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं अधिकारियों के समक्ष अपना चमत्कारपूर्ण प्रदर्शन करके दिखाएँगे तो मैं भी आपका श्रद्धालु बन जाऊँगा।"** इसका कोई उत्तर बाबा ने नहीं दिया था तथा न ही फिर कोई कथित चमत्कार ही दिखाया। यदि वह उपकुलपति की इच्छानुसार प्रदर्शन करना मान जाता तो स्वतः सिद्ध हो जाना था कि वह अपने वस्त्रों के भीतर दाएँ–बाएँ कुछ घड़ियाँ, अगूँठियाँ व भस्म की पुड़ियाँ छिपाकर लाता था तथा वस्त्र को दबाने से घड़ियाँ आदि बाहर आ जाती थीं। दुःख की बात यह है कि अधिकतर लोग यह नहीं सोचते कि बाबा के वस्त्रों के नीचे कोई कारखाना तो था नहीं, फिर घड़ियाँ कैसे बाहर निकल आती थीं यदि ऐसे ही अंगूठियाँ बन सकती हैं तो सभी स्वर्णकारों की दुकानें बन्द हो जानी चाहिए थीं। **'यदि स्वर्ण न हो, स्वर्णकार न हो तथा उसके उपकरण व साधन न हों तो घड़ियाँ बन ही नहीं सकतीं', यह न सोचने वाले लोग ऐसे बाबाओं के शिष्य बनते हैं।** ज्यों–ज्यों उक्त बाबा की पोल खुल गई त्यों–त्यों अपने इस प्रकार के 'चमत्कार' दिखाने उसने बन्द कर दिए तथा वह अपने आश्रम तक ही सीमित होकर रह गया था। परन्तु दिव्य व अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त कर लेने का दावा करने वाले बाबाओं की कमी अब भी नहीं है। बिना उपादान व साधारण कारणों के जब ईश्वर भी कुछ नहीं बना सकता तो कोई मनुष्य कैसे ऐसा कर सकता है?

इस विषय में कुछ ऐसे ढोंगों का भण्डाफोड़ करना भी हमें अभीष्ट है जो ढोंगी साधुओं द्वारा जनता को मूर्ख बनाकर धन ऐंठने के लिए किए–दिखाए जाते हैं। पहला ढोंग किसी बाबा द्वारा भभूत उत्पन्न करना है। वह बाबा राख, इत्र तथा चावल के मांड की गोलियाँ बनाकर उन्हें अंगूठे के बीच फंसकर रखते हैं तथा कुशलतापूर्वक वायु में हाथ हिलाकर लोगों में बांटते हैं प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार सिक्के या चित्र से भभूत पैदा करने के लिए ढोंगी *मरक्यूरस क्लोराइड* का प्रयोग करते हैं। पहले से रसायन लगी अंगुलियों से जब ये लोग चित्रों को छूते हैं तो रासायनिक क्रिया से तस्वीर या सिक्के का अल्यूमीनियम राख में बदल जाता है।

कई ढोंगी साधु त्रिशूल को जीभ के

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

जब मैं स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित दलितोद्धार सभा का महामंत्री बना

● मामचन्द रिवाड़िया

महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द जी के सहयोग से 13 फरवरी 1923 को आगरा में शुद्धि सभा का निर्माण हुआ। उस समय मूल राजपूतों तथा मुस्लिम राजपूतों को एक सूत्र में बांधने का महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द जी को बहुत प्रयत्न करना पड़ा। सभा को बुलाकर इन दोनों समुदायों को एक मंच पर लाने में ये महापुरुष सफल हुए।

1926 में इस सभा का कार्यालय श्री जुगल किशोर बिड़ला जी कि मिल्स को जो सिविल लाईन पुरानी सब्जी मंडी के निकट थी, बनाया गया। इसका नाम स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा रखा गया। श्री रामनाथ सहगल इसके महामंत्री बने। काफी काम हुआ। उनके बाद मैं इस संस्था का 8 वर्ष महामंत्री रहा। मैंने अपने कार्यकाल में दिल्ली की हरिजन बस्तियों में जा जा कर स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा दलितों को मनाई के काम किए उन्हें अवगत कराया और उन्हें आर्य साहित्य भी दिए।

मुझे हाथरस यू.पी. से कुछ आर्य समाज के नवयुवकों ने निमन्त्रण भेजा कि कुछ ईसाई, हिन्दू बनना चाहते हैं। मैं अपने पाँच प्रमुख आर्य बन्धुओं सर्व श्री दीवानचन्द पल्टा जी, श्री देवराज उपप्रधान आर्य समाज बाजार सीताराम, दिल्ली और श्री रमेश भाटिया जी को साथ लेकर कार द्वारा हाथरस पहुँचे। कार में हमने ओ३म् ध्वज, सामग्री आर्य साहित्य और कुछ कपड़े रखे। आर्य बन्धुओं ने हमारा स्वागत किया। अगले दिन हवन से कार्यक्रम शुरू हुआ। भजन हुए और उपदेश के बाद 20–25 ईसाईयों का धर्म परिवर्तन करके आर्य बनाया। सामुहिक भोज हुआ। उन्हें ओ३म् के पन्ने, साहित्य और कपड़े दिए। उसके बाद हम अलीगढ़ आर्य समाज मंदिर गए। वहाँ प्रधान–मंत्री तथा अन्य साथियों को हाथरस की घटना से अवगत कराया और प्रार्थना की कि आप हाथरस के समीप रहते हैं और उन नए बने आर्य बन्धुओं से समय–समय पर सम्बन्ध बनाए रखें।

6–7 महिने बाद मुझे उन नए बनाए आर्य बन्धुओं को पत्र आया कि हमें यहाँ के हिन्दू नहीं अपना रहे हैं और ईसाई भी नहीं अपना रहे हैं, अब हम क्या करें। सुनकर बहुत दुःख हुआ। अलीगढ़ के प्रधान–मंत्री को फोन किया और वहाँ जाकर उन लोगो की समस्या दूर करें। उन्होंने वहाँ जाकर समस्या को सुलझाया।

मंदिर मार्ग नई दिल्ली में जहाँ महात्मा गांधी ठहरे थे, वहाँ मैंने जाकर अपने मित्र श्री राधे श्याम वाल्मिकि से जो मेरे साथ दिल्ली सरकार में अनुसूचित बोर्ड के सदस्य थे सम्पर्क किया। उन्हें बताया कि मैं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का उपमंत्री हूँ और यहाँ हवन करना चाहते है और स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा दलितोद्धार के कार्यों से आप लोगों को अवगत करना चाहते हैं और आर्य समाज जन्म के आधार पर जातपात नहीं मानता बल्कि कार्यों के आधार पर ही वर्ण व्यवस्था को मानता है। एक हरिजन भी कर्म के आधार पर ब्राह्मण बन सकता है और कर्म के आधार पर एक ब्राह्मण शुद्र बन सकता है।

मेरे मित्र श्री राधेश्याम बल्मिकि ने मेरे सुझाव को पसन्द किया और एक हफ्ते बाद मुझे सुचित किया कि उसने अपने चौधरी तथा साथियों से विचार–विमर्श करके सभा का प्रबन्ध कर दिया है, आप रविवार को प्रातः 11 बजे बस्ती में आ जाएँ।

मैं श्री रामस्वरुप को साथ लेकर हवन– सामग्री का सामान तथा प्रसाद लेकर वहाँ पहुँच गया। 30–35 व्यक्ति उपस्थित थे, हमने हवन किया, भजन और उपदेश हुए स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दलितोद्धार के कार्यक्रम से अवगत कराया। आर्य साहित्य तथा सत्यप्रकाश की 5 कापी भेंट की। सहभोज के बाद सभा समाप्त हुई।

आज मैं महसूस करता हूँ कि आज मेरे समय का वह आर्य समाज नहीं है, जिसे हम कहते थे कि आर्य समाज एक आन्दोलन है। चारों तरफ अन्धविश्वास फैला हुआ है। शराब पीना एक प्रतिष्ठा मानी जाती है। गाय के नाम पर दलितों पर अत्याचार किए जाते हैं। अब दलित हजारों की संख्या में धर्मान्तरण कर रहे हैं। अभी महाराष्ट्र में 2 हजार दलित बौद्ध बन गए हैं। समय रहते इस पर विचार नहीं किया गया तो हिन्दू समाज पर आगे चलकर अल्पसंख्यक बनने का खतरा बना हुआ है।

मुझे सूचना मिलती रहती है कि मैं एक प्रसिद्ध आर्य नेता हूँ। हमें गांवों में शादी में घोड़ी पर चढ़ने नहीं देते। हम शादी त्योहारों में अच्छे कपड़े पहनते हैं तो हमें पिटा जाता है। हमारी बहु–बेटियों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं।

मैं अपने आर्य बन्धुओं से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि वे स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हंसराज जी के मार्ग पर चलते हुए दलितोद्धार का कार्य अपने हाथ में लें और उन्हें आर्य समाज के मंदिरों में बुलाकर सम्मानित करें।

नोटः एक माह पूर्व राजस्थान में एक दलित दुल्हा को घोड़ी से उतार कर पैदल चलने पर विवश किया गया। आर्य समाजी नेताओं को इस प्रकार की दुर्घटनाओं का विरोध करना चाहिए ताकि दलित आर्य समाज से जुड़कर स्वामी दयानन्द जी के विचारों को अपना सकें।

A/C– 23 टैगोर गार्डन, नई दिल्ली

☞ पृष्ठ 07 का शेष

चमत्कारों का पोलखाता

आरपार करके दर्शकों को प्रभावित करते हैं। वस्तुतः उस त्रिशूल की बनावट में एक प्रकार का सूप होता है जिसे बाबा लोग कुशलता से छिपा कर जीभ में फंसा लेते हैं। इसी प्रकार कुछ बाबा बने ढोंगी साधु अपनी मन्त्र–शक्ति से स्वयं हवनकुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित करने का दावा करते हैं। इसके लिए वे *ग्लीसरीन* को धोखे से घृत के रूप में प्रयोग करते हैं तथा लकड़ियों के नीचे *पोटेशियम परमैंगनेट* रखा रहता है। जब इस पर हवा की जाती है तो *ग्लीसरीन* तथा *पोटेशियम परमैंगनेट* की क्रिया तो अग्नि प्रज्ज्वलित स्वतः होती है। इस विषय में हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 13 जुलाई, 1875 को पुणे में दिए एक उपदेश में से ये शब्द उद्घृत करना उचित समझते हैं–

"मन्त्रों के कारण आग उत्पन्न होती थी, यदि ऐसा मानें तो मन्त्र बोलने वाला स्वयं क्यों नहीं जलता था?"

कुछ स्थानों पर तान्त्रिक भोले–भाले लोगों से धन उगाहने के उद्देश्य से उन पर भूत–प्रेत का साया बताते हैं तथा उनके मन में बैठे अन्धविश्वास का अनुचित लाभ उठाने के उद्देश्य से उन्हें भयाक्रान्त कर देते हैं। तत्पश्चात् भूत–प्रेत निकालने के नाम पर धन, चावल, नारियल तथा अन्य सामान मंगाते हैं। 'मन्त्र' पढ़ते हुए जब नारियल पर पानी फैंकते हैं, तो पहले से सोडियम अन्दर रखे नारियल में से सोडियम और पानी की क्रिया से आग लग जाती है परन्तु 'साधु' लोग उस व्यक्ति के भूत–प्रेत या चुड़ैल को निकालने का दावा करते हैं। मुस्लिम समुदाय के पीरों–फ़कीरों द्वारा अग्नि पर चलना बहुत प्रचलित है। **वस्तुतः मानव शरीर बिना जले तथा बिना पीड़ा के एक सैकण्ड के तीसरे हिस्से तक आग सहन कर सकता है। इसी सिद्धान्त का लाभ देते हुए ये फ़कीर जल्दी–जल्दी के शोलों पर पाँव रखते हुए आग को पार करते हैं। इससे उन्हें कोई परेशानी नहीं होती।** इसी प्रकार कई 'साधु' अग्नि की लपटों को हाथ पर रखकर आरती करते हैं तथा बाद में उसे मुँह में डाल लेते हैं। सच्चाई यह है कि इसके लिए वे कपूर के बड़े कपड़े का प्रयोग करते हैं। इसे जलाकर एक सैकण्ड में तीन बार जल्दी–जल्दी हाथ बदलते रहने से न तो हाथ जलता है और उसे जब मुँह में रखा जाता है, तो लार मुँह को जलने से बचाता है। टुकड़ा बड़ा होने के कारण यह अंगारे के रूप में नज़र आता है। इसी सिद्धान्त के आधार पर कई 'साधु' मशाल से अग्नि स्नान करते हैं।

खाली जग में पानी पैदा करने का भी एक चमत्कार कुछ लोग दिखाते हैं। इसका आधार है बर्तन में दो सतहों का होना है। बर्तनों के तली में छेद होता है। उसे जब अंगुली से बन्द कर दिया जाता है, तो पानी गिरना बन्द हो जाता है। अंगुली हटा लेने पर पानी दोबारा आने लगता है। इसी विधि का प्रयोग करके केरल में कई 'साधु' लोगों के घरों का जल मन्त्र–शक्ति से आकाश मार्ग से 'स्वर्ग' में भेजते हैं तथा देवताओं को आदेश देकर उसे पृथ्वी पर लाकर भक्तों के दुःख दूर करने का दावा करते हैं। इस प्रकार लोगों को मूर्ख बनाकर अपनी जेबें भरते हैं। इसी प्रकार अस्सी/एक सौ किलोग्राम तक भार अंगुलियों की सहायता से उठाना भी भौतिकी के सिद्धान्त पर आधारित है। मध्य प्रदेश में विमल सागर जैन मुनि ने साड़ी के एक टुकड़े पर मिट्टी की परत पर हवन किया था। बाद में जब उसी साड़ी को निकाला गया तो वह जली बिल्कुल नहीं थी। उस साड़ी का एक–एक टुकड़ा पच्चास–पच्चास हज़ार रु. में भक्तों में बेचा गया था। सत्य यह है कि मिट्टी की परत आग की सारी गर्मी सोख लेती है। इस प्रकार उसके नीचे रखी गई साड़ी जली नहीं थी। एक अन्य चमत्कार में बाल के भीतर पानी सोखे स्पंज का गोला रखकर जटाओं से सरलता से पानी निकाला जा सकता है।

ऐसे चमत्कार वस्तुतः ढोंगी लोगों के 'हाथों की सफ़ाई' हैं। जादूगर ऐसे चमत्कार दिखाते फिरते हैं परन्तु वे ईमानदारी से यह स्वीकारते हैं कि वे विज्ञान व प्राकृतिक व्यवस्था के विपरीत कुछ नहीं कर रहे जबकि दूसरे लोग स्वयं को अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त व्यक्ति घोषित करके दर्शकों को धोखा देते हैं व अन्धविश्वासों का बढ़ावा देते हैं। आवश्यकता है कि वैदिक सिद्धांतों की तार्किक, दार्शनिक व विज्ञान के दृष्टिकोण से परख की जाए तथा सत्य को ही स्वीकार किया जाए।

चूना भट्टियाँ, सिटी सैन्टर के निकट, यमुनानगर (हरियाणा) मो. 09466123677

स्वामी श्रद्धानन्द के दो संकल्प

● भद्रसेन

आज हम विशेष रूप से स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्मरण कर रहे हैं, जिस से उस महापुरुष को श्रद्धापूर्वक सम्मान दे सकें और श्रद्धाञ्जलि के अपने कर्तव्य को पूर्ण कर सकें। इस प्रकार उस महानायक से प्रेरणा, उत्साह, आत्मस्वाभिमान प्राप्त करके अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। क्योंकि स्वामी जी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपने दृढ़ संकल्प तथा पुरुषार्थ से महामानव बन सकता है।

संन्यासी बनने से पहले स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम महात्मा मुंशीराम था। आप का जन्म 1856 में तलवन ग्राम में हुआ जो कि जालन्धर (पंजाब) में विद्यमान है। पिता श्री नानक चन्द जी उत्तर प्रदेश के पुलिस विभाग में कार्य करते थे। अतः बालक मुंशीराम की शिक्षा उत्तर प्रदेश में ही हुई। विशेषतः बनारस और बरेली में। माता के प्रभाव से प्रतिदिन मन्दिर जाना शुरु किया पर वहाँ एक रानी के दर्शनार्थ आने पर पक्षपात का भेदभाव अनुभव करके मुँह मोड़ लिया। अंग्रेज़ी शिक्षा के परिणाम स्वरूप चर्च जाना आरम्भ किया। एक दिन वहाँ पादरी के कुकृत्य को देखकर नास्तिकता की ओर झुकाव हो गया।

1879 में वेद प्रचार की दुन्दुभि बजाते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती बरेली पधारे। महर्षि की प्रचार सभाओं की देखभाल का कार्य श्री नानक चन्द जी को मिला हुआ था। इसी दृष्टि से स्वामी जी के विचार उन के कानों में पड़े। तब उन्होंने सोचा कि मेरा भटका हुआ बेटा स्वामी जी के विचारों से ही सुधर सकता है। घर आकर उन्होंने अपने बेटे को बड़े विश्वास से कहा– ''आजकल बरेली में एक स्वामी जी आए हुए हैं, जिनके भाषण प्रतिदिन होते हैं। इसलिए तुम भी मेरे साथ सुनने के लिए चलो।'' इस पर बेटे ने एकदम कहा– संस्कृत पढ़ा एक साधु अनोखी बात तो क्या बताता होगा? पर पिता के विशेष अनुरोध पर एक दिन उनके साथ सभा में गया। वहाँ नगर के गणमान्य व्यक्तियों को देखकर आश्चर्य से भर गया। पहले ही भाषण से ऐसा मंत्रमुग्ध हुआ। कि फिर तो नियमित श्रोता बन गया। बी.ए. करके कुछ दिन अंग्रेज़ सरकार की नौकरी की पर उसमें गुलामी की भावना रास न आई तब लाहौर आकर वकालत की पढ़ाई प्रारम्भ की। यहीं सत्यार्थ प्रकाश प्राप्ति की घटना घटी। सत्यार्थ प्रकाश के मनन से जहाँ ब्राह्म समाज का आकर्षण मिटा वहाँ धार्मिक विचार सुनिश्चित हुए।

जालन्धर आकर वकालत का कारोबार जहाँ शुरु किया। वहाँ आर्य समाज का कार्य और सामाजिक सेवा भी समारम्भ की। स्कूल से लौटी बेटी (वेदकुमारी) के मुख से ''ईसा मेरा राम, रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया'' बोल सुनकर मुंशीराम जी ने ला. देवराज को अगुआ बना कन्या विद्यालय की नींव डलवाई। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग में गुरुकुल की चर्चा चली जो कि अन्त में मुंशीराम जी का संकल्प बनी। यह पहले गुजरा वाला में और फिर बदल कर कांगड़ी ग्राम (हरिद्वार) में 1902 को विधिवत् प्रारम्भ हुई। अपने बेटों हरीश और इन्द्र को साथ लेकर मुंशीराम जी ने वहाँ डेरा जमा दिया। जंगल साफ करना, झोंपड़ी बनाना, शिक्षा प्रबन्ध आदि गुरुकुल के सारे कार्य करने–कराने आरम्भ कर दिए। गुरुकुल के अधिष्ठाता, आचार्य आदि के गौरव को निभाते हुए 1957 में संन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द नाम रखा। गुरुकुल कांगड़ी को आचार्य रामदेव जी को सौंप कर राष्ट्रीय कार्य के लिए दिल्ली में आसन जमा दिया।

1919 में रौलट एक्ट के विरोध में दिल्ली के अन्दर भारी जुलूस की अगुवाई की। जहाँ चाँदनी चौक में संगीनों के आगे वीर संन्यासी की दहाड़ गूँजी। कुछ दिन बाद जामा मस्जिद के मंच से संगठन का संकल्प उचारा। अमृतसर में जलियांवाला बाग के गोली काण्ड में हुए नर संहार के प्रति रोष प्रकट करने के लिए कांग्रेस के अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष बने। वहाँ नेताओं की भाषा में अपना भाषण न देकर जनता में प्रचलित हिन्दी भाषा में स्वागत भाषण पढ़ा। इस प्रकार स्वाधीनता आन्दोलन नेताओं से जनता से आ जुड़ा।

''संघे शक्तिः'' सामाजिक संगठन की सुदृढ़ता को मूर्तरूप देने के लिए जात–पात निवारण, अछूतोद्धार, दलितोत्थान, और शुद्धि कार्य जैसी कई योजनाएँ चलाईं जिनके लिए कार्यकर्त्ताओं के साथ मिलकर दिन–रात एक कर दिया।

शुद्धि कार्य को कुछ ने ऐसा रंग दिया जो घृणा, ईर्ष्या और द्वेष की ज्वाला में बदल गया। इसके परिणाम स्वरूप 23 दिसम्बर 1926 को स्वामी श्रद्धानन्द अब्दुल रशीद की गोलियों का निशाना बनें।

प्रत्येक विचारशील प्रौढ़ एक न एक दिन यह अनुभव करता है कि हर सफलता, प्रगति, उपलब्धि जिसको मैं चाहता हूँ उसके लिए यदि मैं बचपन से ही लग जाता तो बहुत अच्छा रहता। ऐसे ही मुंशीराम जी जैसे आर्यों ने सोचा कि यदि शिशुकाल से ही बच्चों को ऐसी शिक्षा दिनचर्या, जीवनचर्या देंगे तो इससे वे जल्दी सफल सिद्ध होंगे और यह बात कार्य की जड़ को जमाने या सींचने के समान अत्यन्त उपयोगी है जैसे कि भव्यभवन के लिए नींव से ही योजना बनना और कार्य करना लाभ दायक रहता है। ठीक इसी प्रकार गुरुकुल योजना प्राथमिक पहलू है।

मनुष्य एक विचारशील सामाजिक प्राणी है। अतः उसका जन्म उसकी प्रत्येक क्षेत्र की प्रगति, प्रसन्नता और सफलता में सामाजिक सहयोग, सद्भाव बहुत ही सहयोगी हैं। अतः सामाजिक संगठन अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा विघटन का विपरीत ही परिणाम होता है जैसे कि दंगों में देखा जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसके लिए अनेक प्रयास किए। इससे सिद्ध होता है, कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवनभर इन दोनों लक्ष्यों को साधने के लिए सारे प्रयास किए।

182– शालीमार नगर
होशियारपुर 146001 (पंजाब)

स्वास्थ्य जगत्

● आचार्य मनुदेव वाग्मी

आयुर्वेद के अनुसार आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य स्वास्थ्य के तीन आधार हैं, अतः जो व्यक्ति सुखी और स्वस्थ रहना चाहता है वह इन तीनों की व्यवस्था को अच्छी प्रकार समझे तथा तदनुसार चलने का यत्न करे, क्योंकि खान–पान के अनुसार अर्थात् भोजन और पीने की वस्तुओं से ही रस आदि शरीर की सब धातुओं की पुष्टि होती है। इस प्रकार मनुष्य शरीर को भोजन के प्रथम सार रस से बना हुआ समझो।

आहार के अच्छी तरह भली–भाँति पचने से रस बनता है। रस से रक्त यानि खून बनता है रक्त से मांस बनता है, मांस से मेद–चरबी बनती है, मेद से अस्थि–हड्डी बनती है हड्डी से मज्जा और शुक्र ये गिनती से सात हैं। इन सात को धातु कहते हैं। क्योंकि यह स्वयं मनुष्य में स्थित रहकर देह को धारण करते हैं। इनमें से किसी एक से हमारी ज़िन्दगी कायम नहीं रह सकती। इनका क्षय होने से जीव का क्षय होता है। सुश्रुत ने इन सातों में रुधिर को प्रधान माना है और इनकी बढ़ती–घटती थी रुधिर के ही अधीन मानी गई है। खून ही ज़िन्दगी है। भाव प्रकाश में लिखा है–

जीवो वसति सर्वस्मिन् देहे तत्र विशेषतः।
वीर्ये रक्ते मले यस्मिन् क्षीणे याति क्षयं क्षणात्।।

जीव हमारे सारे शरीर में रहता है। विशेष करके वीर्य, खून और मल में रहता है। जिस समय इसका नाश होता है, उस समय जीव का भी नाश होता है। संक्षेप में तात्पर्य यह है कि इन सात धातुओं से ही हमारी देह ठहरी हुई है और इनमें ही जीव का वास है। इनके बिना काया नहीं है और काया बिना जीव नहीं है, लेकिन रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र इन छः धातुओं की पुष्टि 'रस' (भोजन का सार) से होती है। रस आहार से बनता है अतः यह बात भलीभाँति सिद्ध हो गई कि आहार ही हमारा प्राण रक्षक है।

भोजन में सावधानी की ज़रुरत

भोजन या आहार ही हमारा प्राण–रक्षक है। भोजन से ही हमारी जिन्दगी है। भोजन से ही देह की पुष्टि होती है। भोजन ही शरीर को धारण करता है, इसमें सन्देह करने की कोई बात नहीं है, **सुश्रुत** में लिखते हैं–

आहारः प्राणिनः सद्यो बलकृद्देहधारकः।
आयुस्तेजः समुत्साहस्मृत्योजोऽग्निविवर्द्धनः।।

''भोजन तृप्ति करने वाला, तत्काल ताकत लाने वाला, देह को धारण करने वाला, आयु, तेज, उत्साह, स्मरण–शक्ति और जठराग्नि को बढ़ाने वाला है''।

भावमिश्र भी लिखते हैं,'' आहार से ही देह का पोषण होता है। इससे ही स्मृति, आयु, शक्ति, शरीर का वर्ण, उत्साह, धीरज और शोभा की वृद्धि होती है।''

भोजन की इच्छा रोक़ने से शरीर टूटने लगता है, अरुचि उत्पन्न होती है, थकान–सी मालूम होती है, ऊँघ आती है, आँखें कमजोर हो जाती हैं, धातुओं की जीर्णता और बल का क्षय होता है। साफ मालूम होता है कि, खाने–पीने के बिना हम ज़िन्दा नहीं रह सकते। इसलिए भोजन के मामले में हमको बड़ी सावाधानी से चलना चाहिए। भोजन–सम्बन्धी प्रत्येक नियम को मन में जमा लेना चाहिए।

1. कुछ चीज़ें स्वभाव से ही हितकारी होती हैं। उनके सेवन से हमको यथेष्ट लाभ होते है।

2. कुछ चीज़ें स्वभाव से ही अहितकारी यानि हानि करने वाली होती हैं। उनके सेवन या अधिक सेवन करने से अनेक प्रकार के रोग होने का भय रहता है। उनको या तो कम सेवन करना चाहिए, या बिल्कुल ही खाना नहीं चाहिए।

3. कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं, जो अकेली तो अमृत के समान गुणकारी होती हैं, किन्तु किसी दूसरी चीज के साथ मिलाकर खाने से ज़हर का काम करती हैं। उनको ''संयोग–विरुद्ध'' कहते हैं संयोग–विरुद्ध चीज़ों को कदापि एक साथ न खाना चाहिए– जैसे दूध– मूली इत्यादि।

4. कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं, जो अकेली तो लाभदायक होती हैं, किन्तु दूसरी के साथ बराबर भाग में मिल जाने से विष के समान हो जाती हैं, जैसे शहद और घी। इनको यदि मिला कर खाना हो, तो बराबर न लेना चाहिए। एक को कम और दूसरी को अधिक लेना चाहिए।

5. कुछ कर्म विरुद्ध चीज़ें अहितकारी होती हैं, जैसे काँसे के बर्तनों में दस दिन तक रखा हुआ ''घी'' खराब होता है।

6. अन्न, फल आदि भी, जो भारी और हानिकारक हों, न खाने चाहिएँ। क्योंकि जो चीज़ न पकेंगी या अध– कच्ची रह जाएँगी, उससे अजीर्ण, हैजा आदि भयंकर रोग हो जाएँगे और अन्त में मृत्यु होना भी संभव है।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2017 से साभार

पत्र/कविता

विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी सिफारिशें अवश्य लागू की जाएँ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की एक कमेटी ने केन्द्रीय सरकार को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के बारे में 6 सिफारिशों की हैं।

(1) यह विश्वविद्यालय अन्य केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की भाँति ही माना जाए क्योंकि इसका पूरा व्यय केन्द्रीय सरकार ही करती है। (2) केन्द्रीय विश्वविद्यालय की शाखाएँ नहीं खोली जा सकती हैं। (3) मुर्शिदाबाद– किशनगंज तथा मल्लपुरम् में चल रही शाखाओं को निकटवर्ती विश्वविद्यालयों में विलीन कर दिया जाए। (4) भोपाल तथा पुरों में शाखाएँ खोलने का विचार त्याग दिया जाए।(5) कुलपति चयन में वही प्रक्रिया अपनाई जाए जो अन्यों में अपनाई जाती है। (6) विश्वविद्यालय में प्रशासन के लिए जो वर्तमान निजी नियम चल रहे हैं वे सभी हटाए जाएँ जो और सभी केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में लागू हैं।

पिछले 70 वर्षों में विभिन्न दलों की सरकारों ने तुष्टीकरण की नीति के सहारे विश्वविद्यालय को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ तथा विशेषाधिकार दिए हैं जिसका परिणाम यह निकला कि विश्वविद्यालय के अधिकारी वर्तमान सरकार के निर्देशों का पालन करने से इन्कार कर देते हैं अतः ऐसी स्थिति में उपरोक्त सभी सिफारिशें अवश्य लागू की जानी चाहिएँ।

–इन्द्रदेव
18/186 टीचर्स कालोनी
बुलन्दशहर (उ.प्र.) 203001

ऐसे कारज कर चलो, मरे अमर हो जाए

अब लोग क्या कहेंगे, यह सोच परेशान।
सत्य तुला पर तोल कर, लेना उसको मान।।

साफ साफ सच कहे, फैसला हो जाए।
झूठ अगर कहता रहे, फासला बढ़ जाए।।

हिस्सा बन कर भीड़ का, गलत दिशा में जाए।
सही दिशा में तू चले, एकला भी चल पाए।।

भेड़ों के बीच फंसा, मुंडन को तैयार।
सिंह शावक भेड़ नहीं, दहाड़ तू इस बार।।

साथ भीड़ के चल दिये, बिना दिशा पहचान।
अकेला अब तू चल पड़, दशा दिशा को जान।।

ठूंठ बड़े औंधे गिरे, आंधी में इस बार।
लघु दूब पर हिली नहीं, बची रही हर बार।।

ऐसे कारज मत करो, जीते जी मर जाए।
ऐसे कारज कर चलो, मरे अमर हो जाए।।

गुब्बारे खरीद कर, बच्चा खुश हो जाए।
दूजा उसको बेच कर, अपनी भूख मिटाए।।

अपनी ज़रूरत को सब, देते हैं सम्मान।
खत्म ज़रूरत हो गई, फिर ना मिलता मान।।

जितनी जिसकी जरूरत, उतना वही गरीब।
पैसा पास पड़ा नहीं, दिल के बड़े अमीर।।

नरेन्द्र आहुजा "विवेक"
802 GH-53 सेक्टर-20
पंचकूला, हरियाणा

जननायक को जातीय संकीर्णता में न जकड़ें

'आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि का साप्ताहिक पत्र, सप्ताह रविवार, 11 जून 2017 से 17 जून 2017, अंक– 75 का अवलोकन किया। पृष्ठ संख्या–3,4 पर विद्वान लेखक– डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह का लेख 'प्रातः स्मरणीय शूरवीर महाराणा प्रताप' पढ़ा। लेखक का महाराणा प्रताप को महाराणा प्रताप सिंह लिखना उचित नहीं? उनके सौतले भाई जगमाल को मात्र जगमाल ही लिखा गया है?

बाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड में, अवध नरेश दशरथ का नाम 'राजसिंह' दिया गया है, परन्तु उनके पुत्र रामचन्द्र को प्रायः इस महाकाव्य में "राम" लिखा गया है। प्रभु रामचन्द्र वस्तुतः मर्यादा पुरूषोत्तम राम हैं। उन्हें वाल्मीकीय रामायण में भारतवर्ष का पर्याय दर्शाया गया है। वे भारत के जन–जन के पूज्य पूर्वज हैं, लोकदेव हैं। इतिहासकारों ने अपने इतिहास की पुस्तकों में महाराणा प्रताप को प्रताप, महाराणा व महाराणा प्रताप ही लिखा है, जबकि उनके पिता को महाराणा उदय सिंह, अनुज को राणा शक्ति सिंह व पुत्र को अमर सिंह व महाराणा अमर सिंह! महाराणा प्रताप को स्वतंत्रता का पर्याय माना गया, वे भी एक प्रकार से लोक–पूज्य हो गए: भारतीय जन उन्हें अपना आदर्श मानते हैं उनकी अश्वारोही प्रतिमा भारत भर में खड़ी की गई है, और की जा रही है। प्रताप के नाम पर संगठन व संस्थान प्रतिष्ठान बने हैं। अतः वे महाराणा प्रताप हैं। उनके नाम के पीछे 'सिंह' उपाधि लगाना कदापि उचित नहीं है। मान्यता प्राप्त महापुरुष जन–नायक को जातीय संकीर्णता में जकड़ने का प्रयास उचित नहीं है। क्षमा प्रार्थी हूँ; क्या करूँ, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि सत्य को स्वीकारने व असत्य को छोड़ने के लिए सर्वदा तैयार रहें।

स्वामी गोपाल आनन्द बाबा
रजरप्पा पीठ चित्तरपुर, रामगढ़, झारखण्ड
9386910387

****

मुसलमानों के लिए खुश-खबर

दुनिया के मुसलमानों के लिए इससे बड़ी खुश–खबर कौन सी हो सकती है? मेरे ख्याल में ऐसी उम्दा खबर उन्होंने कई सदियों बाद सुनी होगी। सउदी अरब तो इस्लाम का गढ़ है। इस्लाम की जन्मभूमि है। अब सउदी अरब ही कट्टरपंथी इस्लाम को तिलांजलि देने के लिए तत्पर हो गया है। सउदी अरब के 32 वर्षीय युवराज मोहम्द बिन सलमान ने इस इन्कलाबी परिवर्तन का बीड़ा उठाया है। वे स्वभाव से ही क्रांतिकारी हैं। उन्होंने कुछ हफ्ते पहले ही शाही खानदान के कई भ्रष्ट रईसों को पकड़कर अंदर कर दिया था। सलमान ऐसे पहले बादशाह होंगे, जिनके पास कानून की डिग्री होगी। वे शायद अकेले ऐसे बादशाह होंगे, जिनकी सिर्फ एक पत्नी है। उन्होंने संकल्प किया है कि वे इस्लाम को पोंगापंथ से बाहर निकालेंगे और पैगंबर मोहम्मद के जमाने में जैसी प्रगतिशील परंपराएं थीं, उन्हें कायम करेंगे। इस दिशा में उन्होंने कई कदम उठाए हैं। न्यूयार्क टाइम्स ने ऐसे 10 कदम गिनाए हैं। पहला, धार्मिक पुलिस के अधिकार में बड़ी कटौती की गई है। यह पुलिस औरतों को इसलिए गिरफ्तार कर लेती थी कि उन्होंने दस्ताने क्यों नहीं पहन रखें हैं। दूसरा, महिलाएं अब 2018 से कार चला सकेंगी। तीसरा, फरवरी में जेद्दाह में कॉमिक कॉन फेस्टिवल हुआ, जिसे इस्लाम–विरोधी समझा जाता था। चौथा, कोई भी स्त्री तब तक कोई सरकारी सेवा नहीं ले सकती थी, जब तक कि वह अपने किसी पुरुष संबंधी की सहमति न ले लें। यह नियम रद्द कर दिया गया है। पांचवां, सिने–उत्सव भी मनाया गया। अब कई मॉल में सिनेमा घर भी बनेंगे। छठा, मदीना में एक परिसर ऐसा बनेगा, जहां बैठकर लोग विचार करेंगे कि इस्लाम के नाम पर कट्टरपंथियों ने क्या–क्या गलत बातें थोंप रखी थीं। सातवां, रियाद और जेद्दाह में कॉमेडी फेस्टीवल हुए और आगे भी होते रहेंगे। आठवां, सितंबर 2017 में पहली बार मुस्लिम महिलाओं को स्टेडियम में जाने की इजाजत मिली। नौवां, सउदी अरब में अब इंटरनेट जोरों से चलेगा। लगभग 3 अरब डॉलर से अब इंटरनेट परिसर भी बनेगा। दसवां, विदेशी पर्यटकों के लिए सरकार ऐसी सैरगाहें भी बना रही है, जहां पोषाख संबंधी कोई पाबंदी नहीं होगी। यह सब परिवर्तन करते हुए युवराज सलमान का कहना है कि वे पैगंबर के जमाने की खुली व्यवस्था कायम करेंगे, जहां औरत और मर्द संगीत सभाओं में एक साथ जाया करते थे और मुसलमान लोग ईसाईयों और यहूदियों का सम्मान किया करते थे। औरतें न्यायाधीश हुआ करती थीं। युवराज सलमान के इस क्रांतिकारी इरादे का मैं सम्मान करता हूँ लेकिन मैं उनसे यही कहूंगा कि वे पश्चिम की अंधी नकल से बचें और भारत जैसे उच्च सांस्कृतिक राष्ट्र की ओर देखें तो सारे इस्लामी जगत का बहुत कल्याण होगा।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
ई–मेल : dr.vaidik@gmail.com

डी.ए.वी. अशोक विहार में दिल्ली राज्य की खो-खो प्रतियोगिता

डी.ए.वी. पब्लिक सी. से. स्कूल, अशोक विहार फेज–4 में बीसवीं दिल्ली स्टेट श्री दरबारी लाल स्मृति खो–खो प्रतियोगिता का भव्य स्तर पर आयोजन किया गया। दिल्ली स्टेट खो–खो एसोसिएशन के सहयोग से आयोजित इस प्रतियोगिता में दिल्ली तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के 72 विद्यालयों की टीमों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। लड़कों और लड़कियों के लिए दो भिन्न आयु वर्गों– (14 वर्ष से कम) तथा (19वर्ष से कम) में मैच आयोजित किए गए।

प्रतियोगिता का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय खो–खो ऐसोसिएशन के सचिव श्री सुरेश शर्मा जी ने उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई।

चार दिन तक चली इस प्रतियोगिता में लड़कियों के 14 वर्ष से कम आयु वर्ग में राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, कोहाट एन्क्लेव तथा 19 वर्ष से कम आयु वर्ग में राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, बदरपुर विजयी घोषित किए गए। लड़कों के 14 वर्ष से कम आयुवर्ग में तथा 19 वर्ष से कम आयुवर्ग में राजकीय उच्चतर माध्यमिक छात्र विद्यालय राजनगर–II पालम के छात्र विजेता घोषित किए गए। लड़कियों के कनिष्ठ वर्ग में राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय बदरपुर नं. तीन की शहनाज़ तथा वरिष्ठ वर्ग में राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, आनंदवास कोहाट ऐन्क्लेव की मधु को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में पुरस्कृत किया गया, जबकि लड़कों के कनिष्ठ वर्ग में गीता बाल भारती विद्यालय के संदीप तथा वरिष्ठ वर्ग में राजकीय उच्चतर माध्यमिक छात्र विद्यालय, राजनगर–II पालम के छात्र राहुल को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया।

समापन समारोह में विद्यालय की मैनेजर श्रीमती आदर्श कोहली तथा प्राचार्या श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने विजेता टीमों तथा सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। श्रीमती कुसुम भारद्वाज तथा श्रीमती आदर्श कोहली ने अपने संबोधन में विजेता टीमों को बधाई दी तथा सभी प्रतिभागी टीमों के प्रयासों की हृदय से सराहना करते हुए उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

वैदिक संस्कृति ज्ञानवर्धिनि प्रतियोगिताओं का पारितोषिक वितरण समारोह

आर्यसमाज खेड़ाअफगान सहारनपुर और वैदिक संस्कृति उत्थान के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनि प्रतियोगिताओं का पारितोषिक वितरण समारोह मनाया गया। सर्वप्रथम श्री रणवीर शास्त्री जी ने यज्ञ कराया। आज के यजमान डा. प्रमोद कुमार सपत्नीक थे।

यज्ञ के पश्चात श्री रणवीर शास्त्री जी ने कहा आज का युवावर्ग वैज्ञानिक स्तर पर धर्म की सच्चाई को परखना चाहता है। धर्म शब्द का अर्थ कर्तव्य है। धर्म सभी का सदा एक ही रहता है। आज हमें प्रचार करने के नए साधन अपनाने चाहिए। शास्त्री जी ने विद्यार्थियों से कहा कि तुम्हें सदैव आगे बढ़ने के लिए अपने कार्यों में अपने मन में विकास के प्रति सदैव श्रद्धा रखनी चाहिए। अपने परिश्रम में कमी न कर प्रथम शारीरिक उन्नति पर ध्यान देकर बौद्धिक विकास में अपनी पूरी शक्ति लगाकर पूरी तन्मयता से कार्य करेंगे तो सफलता चरण चूमेगी, यही सफलता प्राप्त करने की कुंजी है।

श्री नागेन्द्र कुमार जी ने कहाकि महर्षि दयानन्द ने ईश्वर और सत्य के लिए कभी समझौता नहीं किया।

अन्त में प्रधान जी ने सभी क्षेत्रवासियों अध्यापकों एवं विद्यार्थियों और अन्य सहयोग करने वालों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन वेदभूषण गुप्त और अमित आर्य ने किया। अन्त में सभी विद्यार्थियों को नकद इनाम और साहित्य प्रदान किया गया। अन्त में ऋषि लंगर के साथ का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

गुरुकुल सूपा में स्व. आचार्य ज्ञानेश्वर को श्रद्धांजलि

गुरुकुल सूपा आश्रम में स्व. आचार्य ज्ञानेश्वरआर्य को गुरुकुल सूपा, नवसारी द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पण किए गए। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री सुरेशभाई कलाणी ने आचार्य ज्ञानेश्वरजी के व्यक्तित्व की विस्तृत चर्चा की और उनके कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे महान संत समान आर्य समाज के प्रचारक आचार्य ज्ञानेश्वरजी के दुःखद समाचार से गुरुकुल सूपा के समस्त ब्रह्माचारी, परिवारजन, समस्तट्रस्टीगण और अन्तरंग सदस्य दुःख का एहसास कर रहे हैं। आचार्य ज्ञानेश्वरजी दो बार गुरुकुल सूपा की मुलाकात ले चुके है। संस्था के बारे में उनके ख्याल और श्रद्धा के बारे में चर्चा की गई आचार्य ज्ञानेश्वरजी गुरुकुल श्रद्धानंद जी के द्वारा स्थापित होने के कारण गुरुकुल सूपाके ब्रह्माचारियों प्रति विशेष भावना रखते थे।

अंत में गुरुकुल सूपा के परिवारजनों ने सच्चे हृदय से आचार्य ज्ञानेश्वरजी को श्रद्धा सुमन अर्पण किए।

आर्यसमाज कोलकाता का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज, कोलकाता द्वारा प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार आर्य समाज, 19 रवीन्द्र सरणी, कोलकाता का 132वाँ वार्षिकोत्सव 23 दिसम्बर, 2017 से 31 दिसम्बर, 2017 तक हृषीकेश पार्क (सिटी कॉलेज के पास), आम्हर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जाएगा। स्वामी आर्यवेशजी (दिल्ली), आचार्य सोमदेव शास्त्री (परोपकारिणी सभा, अजमेर) तथा श्रीमती प्रियंका भारती (भरतपुर–राजस्थान) प्रवचनकर्त्ता होंगे। इसमें प्रतिदिन प्रातः सामवेद पारायण यज्ञ, भजन व उपदेश, वंग भाषा कार्यक्रम, दोपहर में आर्य संस्कृति सम्मेलन, महाविद्यालय के कार्यक्रम, बाल सत्संग तथा सायंकाल में संध्या–भजन, प्रवचन, वेद सम्मेलन, सामूहिक सत्संग, गुरुकुलीय कार्यक्रम आदि होंगे।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 20/21-12-2017

रक्तदान शिविर लगाकर मनाया स्वर्ण जयंती

रेड रिबन क्लब कॉलेज, बालाजी मानव सेवा समिति अबोहर के सहयोग से डीएवी शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के प्राध्यापकगणों श्रीमान अजय खोसला, गुरप्रीत कौर और विद्यार्थियों तथा सहयोगीगण श्री रामवीर ने पूरे उत्साह से योगदान डालकर भूमिका निभाई। प्राचार्या डॉ. (श्रीमति) उर्मिल सेठी जी ने बड़े गर्व से बताया डीएवी शिक्षा महाविद्यालय अबोहर के इतिहास में स्वर्ण जयंती पर 52 यूनिट रक्तदान होने से इसका नाम सुनहरी अक्षरों में जुड़ गया है। डॉ. (श्रीमति) सेठी ने बताया कि रक्तदान से बढ़कर कोई भी दान नहीं है जो किसी की जिंदगी बचा सके। महाविद्यालय प्रत्येक गतिविधि में यदि

आसमान छू रहा है तो वह धरातल की सारी समस्याओं के प्रति पूर्ण जागरूक है इसका साक्ष्य है कि विद्यार्थियों ने अपना सामाजिक दायित्व समझते हुए और पूर्ण खुशी से अपना रक्त दूसरों की जिंदगी को बचाने के लिए दिया, उन्हें इस बात की बहुत खुशी है। प्रशिक्षण ले रहे भावी अध्यापक एचआईवी एड्स जैसी खतरनाक बीमारियों से जागरूक हैं और आगे जाकर अपने विद्यार्थियों को भी जागरूक करेंगे। उन्होंने छात्र छात्राओं को इन बीमारियों से बचने की और जागरूक रहने की पूर्ण अपील की है।

प्राचार्या ने पंजाब सरकार द्वारा चलाए जा रहे रेड रिबन क्लब के ऐसे आयोजनों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। शिविर के अंत में रेड रिबन क्लब के इंचार्ज श्री अजय खोसला, श्री विनीत खुँगर, डॉ. गुरदीप कौर, श्रीमति सिंपल कंबोज जी द्वारा श्री बालाजी मानव सेवा समिति के प्रधान रजत लूथरा और सदस्य अंकुर छाबड़ा, राजन बत्रा, नरेश चावला, शालू बहल तथा अबोहर के सरकारी अस्पताल से आई डॉक्टर फ्रैंकलिन मसीह, हैप्पी सिंह तथा उनकी पूरी विशेष टीम को स्मृति चिन्ह देकर उनका तहे दिल से धन्यवाद किया गया। श्री बालाजी मानव सेवा समिति द्वारा इस रक्तदान शिविर में युवा वर्ग (विद्यार्थियों) से मिले भरपूर प्रोत्साहन के लिए मैडम प्राचार्या (श्रीमति) उर्मिल सेठी जी को स्मृति चिन्ह देकर उनका धन्यवाद किया गया।

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालंधर में भजन संध्या एवं वेदोपदेश

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालंधर के प्रांगण में भजन संध्या एवं वेदोपदेश का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महोपदेशक महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं माता सत्यप्रिया यति जी मुख्यातिथि स्वरूप उपस्थित रहे। सर्वप्रथम कॉलेज प्राचार्या प्रो. डॉ. श्रीमती अजय सरीन जी तथ जस्टिस एन.के.सूद, उप प्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति एवं चेयरमैन स्थानीय समिति द्वारा मुख्यतिथि का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर भक्तिपूर्ण भजन प्रस्तुत किए गए। कॉलेज की छात्राओं द्वारा भजन–'मुझमें ओ३म्... तुझमें ओ३म्' प्रस्तुत किया गया तथा ओ३म् की ध्वनि से समस्त वातावरण को ओ३म्मय बनाया गया। श्री राजेश प्रेमी ने गुरु तेग बहादुर जी के शहीदी

दिवस को समर्पित भजन 'वाटां लम्मियां ते रस्ता पहाड़ दा'... प्रस्तुत कर मनुष्यता की रक्षा करने वाले गुरुजी के प्रति अपने भाव व्यक्त किए। श्रीमती रश्मि घई ने भी सुरीली व मधुर आवाज में 'प्रभु ऐसी कृपा कर दो... तेरे दर पे नित आऊं' भजन प्रस्तुत कर प्रभु चरणों में अपना भाव प्रस्तुत किया।

प्राचार्या डॉ श्रीमती अजय सरीन ने सभागार में उपस्थित सर्व आर्य बन्धुओं का स्वागत किया एवं महात्मा हंसराज तथा स्वामी दयानंद जी के प्रति अपना श्रद्धा भाव प्रस्तुत करते हुए सृष्टि के विकास में समान महत्त्व रखने वाले स्त्री–पुरुष के प्रति सम्मान व्यक्त किया।

महोपदेशक स्वामी चैतन्यमुनि जी ने अपने विचारों की गंगा में सबको सरोबार करते हुए कहा कि परमात्मा की देन अमूल्य है हमें परमात्मा द्वारा दिए अन्तःकरण, ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों का सदुपयोग करते हुए एक गुणी इंसान बनना चाहिए। इसी अवसर पर माता सत्यप्रिया जी ने एक भजन प्रस्तुत कर समस्त सभागार को वसमय बना दिया।

इस अवसर पर श्री अरविन्द घई, सचिव डी.ए.वी. प्रबंधर्त्री समिति नई दिल्ली एवं सदस्य स्थानीय समिति, श्रीमती रश्मि घई, श्री इन्द्रजीत तलवाड़, श्री एस.एन. मायर, श्री कुंदन लाल अग्रवाल, श्री एस.पी.सहदेव, श्री सुरेन्द्र सेठ, श्रीमती पूर्णिमा बेरी, रविन्द्र शर्मा का अभिनन्दन किया। अंत में शांतिपाठ द्वारा सर्वजन हेतु मंगलकामना की गई।

बी.बी.के. डी.ए.वी. अमृतसर में "द कवैस्ट कॉन्टीन्यू" पर संगोष्ठी

बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन अमृतसर, वैदिक संस्कृति और महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण को आत्मसात करते हुए विद्यार्थियों को आधुनिक के साथ–साथ भारतीय संस्कृति और परम्पराओं का भी ज्ञान देता है। इसी संदर्भ में सरदार अमरदीप सिंह द्वारा रचित पुस्तक "द कवैस्ट कॉन्टीन्यू: लॉस्ट हैरिटेज द सिक्ख लैगेसी इन पाकिस्तान" पर एक संगौष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें सरदार अमरदीप सिंह मुख्यातिथि तथा सरदार गुणबीर सिंह (अध्यक्ष दलबीर फाऊंडेशन) एवं श्री पुनीत वतन (चेयरमैन, वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर) भी उपस्थिति रहे।

कार्यक्रम के आरम्भ में प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया एवं श्री सुदर्शन कपूर (चेयरमैन, लोकल मैनेजिंग कमेटी) द्वारा अतिथियों का पुष्प–गुच्छों से अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध लेखक सरदार अमरदीप सिंह जी ने अपनी पहली पुस्तक "द लॉस्ट हैरिटेज" के विषय में जानकारी देने के बाद, अपनी दूसरी पुस्तक "द कवैस्ट कॉन्टीन्यू: लॉस्ट हैरिटेज द सिक्ख लैगेसी इन पाकिस्तान" पर बात करते हुए कहा कि उन्होंने कड़ी मेहनत करते हुए पाकिस्तान के 126 से भी अधिक शहरों तथ गाँवों में जाकर सिक्ख इतिहास की निशानियाँ एकत्रित कीं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान–यात्रा के दौरान कैसे सिक्ख विरासत को मानवता का प्रतीक बता–कर उन्होंने इस कार्य को अंजाम दिया।

प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया ने कहा कि सरदार अमरदीप सिंह द्वारा किया गया यह शोध कार्य आने वाले समय में हमारा मार्गदर्शन करेगा क्योंकि यह हमें, हमारे ऐतिहासिक मूल्यों एवं धरोहर के साथ जोड़ता है। अंत में श्री सुदर्शन कपूर जी द्वारा उपस्थिति का धन्यवाद किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**